।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

स्पिरिचुअल साइंस
Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 124 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका सितम्बर– 2018 30/–प्रति

– क्या आप नशे से परेशान हैं ?
– क्या आप बीमारी से ग्रसित हैं ?
– क्या आप मन में असीम शांति चाहते हैं ?
– विद्यार्थियों के मन की एकाग्रता व याद्दाशत में वृद्धि ?
– आध्यात्मिक उत्थान के साथ जीवन का सर्वांगीण विकास ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर, मंत्र जप के साथ, उनके चित्र पर15 मिनट ध्यान करके देखें!
(अपने घर बैठे ही)

ऑनलाइन शक्तिपात-दीक्षा प्राप्त करने के लिए लॉग-ऑन करें-
Web : www.the-comforter.org

मंत्र दीक्षा के लिये मोबाइल नम्बर डायल करें -
07533006009

जोधपुर आश्रम - सन् 2009

सन्धयाकालीन पलों में भावपूर्ण मुद्रा में विराजे हुए सद्गुरुदेव

www.the-comforter.org

"ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः"

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 124 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका **सितम्बर – 2018**

वार्षिक 300/– ❋ द्विवार्षिक : 600/– ❋ आजीवन (11 वर्ष) : 3000/– ❋ मूल्य 30/–

❖

संस्थापक एवं संरक्षक :

पूज्य सद्गुरुदेव

श्री रामलालजी सियाग

(ब्रह्मलीन)

❖

सम्पादक :

रामूराम चौधरी

कार्यालय :

Spiritual Science

पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,

होटल लेरिया के पास,

चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :

spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra

Near Hotel Leriya,

Chopasani, JODHPUR (Raj.)

INDIA - 342 003

☎ +91 0291-2753699

Mob. : +91 9784742595

e-mail :

avsk@the-comforter.org

Website :

www.the-comforter.org

अ नु क्र म

वृत्ति परिवर्तन....................4

कार्य की पूर्णता (सम्पादकीय)....................5

सद्गुरुदेव का प्रवचन....................6

दीक्षा....................7

कुण्डलिनी जागरण....................8

Religious Revolution in the World....................9

हृदय मंथन....................10

योगियों की आत्मकथा....................11

योग के बारे में....................12

योग के आधार....................13

मेरे गुरुदेव....................14

सिद्धयोग....................15

शेष पृष्ठ 7 का....................16–18

चित्र पृष्ठ....................19–22

अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....................23–32

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....................33

मनुष्य और विकास....................34

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....................35–36

सद्गुरुदेव से प्रार्थना....................37

ध्यान विधि....................38

www.the-comforter.org

'वृत्ति परिवर्तन'

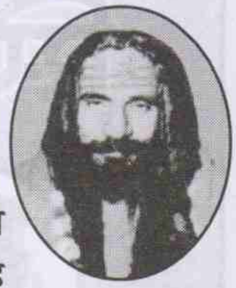

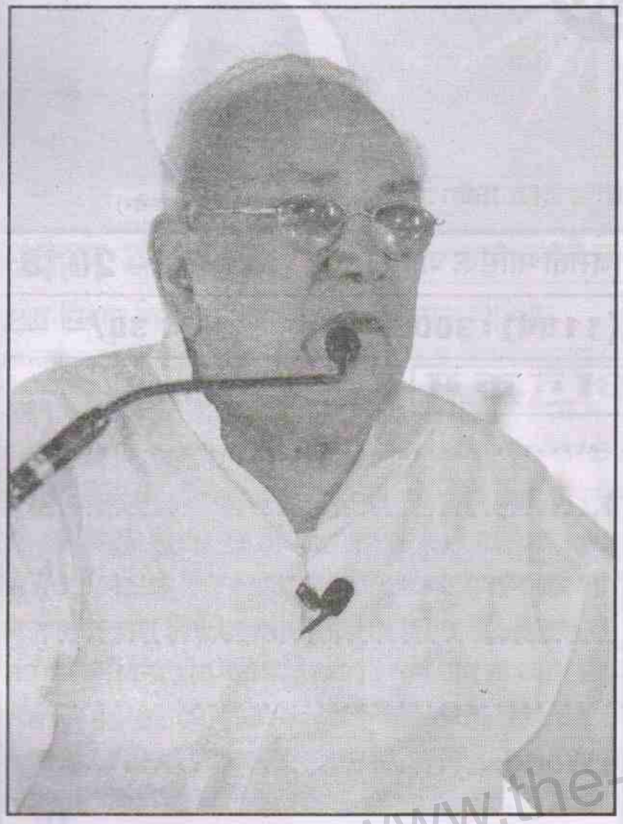

सृष्टि की उत्पति त्रिगुणमयी माया से हुई है- चाहे उसे ब्रह्मा, विष्णु, महेश कह दो या वात, पित, कफ कह दो, इससे सृष्टि की उत्पति होती है। हर व्यक्ति में ये तीनों वृत्तियाँ होती हैं, एक प्रधान व दो गौण होती हैं। जो वृत्ति प्रधान होती है, जो Dominant करती है, वो जो माँगती है, उसको Supply (पूर्ति) करना पड़ता है। तामसिक वृत्ति जो Dominant कर रही है तो उसका खान-पान (शराब-मीट आदि) ये उसको खाना ही पड़ेगा, क्योंकि अंदर माँग है-**अब मेडिकल साइंस, उस माँग को खत्म नहीं कर पाती, उससे छीनती है,** उस वृत्ति से उसका खान-पान छीनती है, जो खान-पान है उसका, वो वृत्ति फिर आदमी को तंग करती है।

विज्ञान नशों को नहीं छुड़वा सकती, मगर हमारे इससे (सिद्धयोग से) छूट जाता है। नाम जप और ध्यान से आदमी की वृत्ति बदलती है। गीता में 17 वें अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है कि **त्रिगुणमयी माया बड़ी दुरुह है, जो वृत्ति माँगती है, वो उसे देना ही पड़ता है।**

www.the-comforter.org

17वें अध्याय में 8,9,10 और 10 वें अध्याय के एक श्लोक में वर्णन आता है कि ये वृत्ति बदली जा सकती है। लेकिन मेडिकल-साइंस (Medical Science) में वृत्ति परिवर्तन की सामर्थ्य नहीं है, वो तो टेस्ट-ट्यूब (Test-Tube) में जो परिणाम आ गया है, इसके अलावा कुछ नहीं समझती और योगवालों का **टेस्ट-ट्यूब (Test-Tube) तो पूरा ब्रह्माण्ड है।** इस नाम जप व ध्यान से आपकी वृत्ति बदल जाएगी। अब नशा छूटता है, वो भी एक ठोस दर्शन पर आधारित परिवर्तन है। **मेरे से ये कथा सुनली तो इससे ये नशा नहीं छूटने वाला, बीड़ी नहीं छूटती और यहाँ तो हेरोइन छूटी है, अब उसका आधार भी हमारा दर्शन है।**

अब After Effects कोई चीज नहीं होती। अब मैं नशा करता हूँ, रात को किया, सुबह साफ हो गया। सुबह लेना पड़ेगा क्योंकि अंदर माँग है, आप उस Demand (माँग) को खत्म नहीं कर सकते बल्कि उससे नशा छीनते है। मैं Demand (माँग) को खत्म कर देता हूँ। मैं नहीं मानता कि After Effects नाम की कोई चीज है। Demand (माँग) है नशे की तो उसकी पूर्ति करनी पड़ेगी, लेकिन आपकी साइंस Demand (माँग) को खत्म नहीं कर सकती। इस तरह नाम जप व ध्यान से आपके नशे छूट जाएंगे। मैं Challenge (चुनौती) के साथ कहता हूँ कि आप में हिम्मत है तो नशा मत छोड़ो, आज से फैसला कर लो, मगर नाम जप को भी मत छोड़ना, नाम के साथ नशा रह ही नहीं सकता,

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग 21.05.2005

कार्य की पूर्णता

हमेशा ही नेक इंसान जो कार्य अपने हाथ में लेते है, जो अपने गुरु का आदेश या जिन कार्य में मानव कल्याण का हित साधित हो, उस कार्य को बीच में नहीं छोड़ते हैं। जीवन की अच्छी आदत यही है कि किसी भी नेक कार्य को बीच में नहीं छोडना चाहिए।

श्री रामकृष्ण परमहंस ने ईश्वरीय आदेश के अनुसार भारत की महिमा को बढ़ाने के लिए तपस्या की और स्वामी विवेकानंद को आध्यात्मिकता से ओतप्रोत कर विश्व में सनातन का संदेश देने के लिए तैयार किया। सत्य के सामने हजारों झंझावातों को चीरते हुए, भूख-प्यास से व्याकुल, परेशानियों को झेलते हुए भी **अमेरिका** गए तथा विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की पताका फहराई। **गुरुदेव के आदेश की पालना में स्वामी जी को कई भयंकर समस्याओं से जूंझना पड़ा लेकिन सद्‌गुरुदेव के प्रति सच्ची भक्ति के कारण उन्होंने कभी भी निराशा को नजदीक नहीं आने दिया।** शारदा माँ ने श्री रामकृष्ण के कार्य को पूरा करने के लिए अपना पूरा जीवन ही इसमें लगा दिया, वे स्वामी जी की टीम को प्रोत्साहित करती रही।

स्वामी जी के अंतिम दिनों की घटना है कि उनके देवलोक गमन का संदेश दिल्ली पहुँचा। दिल्ली में स्वामी जी ने अपने दो शिष्यों को नियुक्त कर रखा था तथा आदेश दिया था कि जब तक मेरा आदेश नहीं आवें, आप यहीं अपने कार्य में लगे रहना। उनको स्वामी जी के देवलोकगमन का समाचार मिला लेकिन वे गुरुदेव आदेश को शिरोधार्य मानकर अपने कार्य में **पूर्ण निष्ठा** में लगे रहे। **सद्‌गुरु का आदेश ही सर्वोपरि है।**

कई शताब्दियों पहले यह संस्कृत में लिखा गया था। अभी कुछ वर्ष पहले तक बिना संस्कृत जाने कोई युरोपीय इसे पढ़ नहीं सकता था और संस्कृत जानने वाले यूरोपीयन कम ही थे। इसलिए यूरोप की भाषाओं में से किसी एक में इसका अनुवाद करना आवश्यक था। बाबू प्रतापचन्द्रराय ने इस काम के लिए अपने-आपको अर्पित कर देने का निश्चय किया। अपने देश में ही उन्हें एक ऐसे विद्वान मित्र मिल गये जो इस संस्कृत की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद कर सकते थे। इनका नाम था किशोरीमोहन गांगुली। इस पुस्तक के एक-के-बाद एक कई खण्ड प्रकाशित हुए।

बारह वर्षों तक प्रतापचन्द्र राय इस काम में लगे रहे। उन्होंने अपनी सारी पूँजी इस पुस्तक के प्रकाशन में लगा दी और जब उनके अपने पास कुछ न बचा तो देश के भिन्न-भिन्न भागों में वे घूमे। जिस किसी ने कुछ देने में रूचि दिखलायी उन सबसे उन्होंने सहायता माँगी। इन सहायता देने वालों में राजा, प्रजा, विद्वान और अनपढ़ व यूरोपीय व अमेरिकन मित्र भी शामिल थे।

इन्हीं यात्राओं में से किसी एक में उन्हें एक ऐसे घातक ज्वर ने धर दबाया कि वही उनकी मृत्यु का कारण बन गया। रोग की अवस्था में भी जब कष्ट के कारण वे अधिक बातचीत नहीं कर सकते थे उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, **''यह पुस्तक समाप्त होनी ही चाहिए।** मेरे क्रिया-कर्म पर खर्च मत करना, क्योंकि पुस्तक के प्रकाशन के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ेगी। तुम भी यथासंभव सादगी से रहना, जिससे महाभारत के लिए पैसा बच सके।''

वे महाभारत और उसके महाकाव्य के लिए प्रेम से भरा हृदय लिये हुए इस लोक से विदा हुए।

उनकी विधवा पत्नी सुन्दरीबाला राय ने पूरी सच्चाई के साथ उनकी महद् इच्छा का पालन किया। एक वर्ष में अनुवादक महोदय ने कार्य पूरा कर दिया और महाभारत की ग्यारह जिल्दें यूरोपीय जनता के सम्मुख आ गयी। अब वह उस अद्भुत महाकाव्य के अट्ठारह पर्वों को पढ़कर, उसका महत्त्व अनुभव कर उसकी सराहना कर सकती थी। महाभारत को पढ़कर वह निश्चय ही प्राचीन भारत के गंभीर विचारकों व कवियों की महान् प्रतिभा और ज्ञान का मान करना सीखेगी।

ये है उन सबके पुरुषार्थों के परिणाम, जो प्रतापचन्द्र राय तथा अन्य योग्य व्यक्तियों की तरह अनवरत प्रयत्न करना जानते हैं।

और तुम, भले बालको, क्या ऐसे पुरुषों और स्त्रियों की पंक्ति में खड़ा होना नहीं चाहते जो अच्छे कार्यों से कभी नहीं थकते और कार्य को पूरा किये बिना उसे कभी बीच में नहीं छोड़ते ?

इस विस्तृत संसार में करने योग्य अच्छे कार्यों का अभाव नहीं है और न ही उन अच्छे व्यक्तियों का अभाव है जो उनको हाथ में लेते हैं; पर जिसका प्राय: अभाव होता है वह है अध्यवसाय; केवल वही उन्हें कार्यसिद्धि तक ले जा सकता है।

आराधना करते हुए साधक को अपनी सामर्थ्य के अनुसार इस दर्शन का प्रसार-प्रचार करना चाहिए।

-सम्पादक

सद्‌गुरुदेव का प्रवचन

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में सद्‌गुरुदेव सियाग द्वारा की जाने वाली वैदिक दर्शन की व्याख्या

एकमात्र हमारा धर्म है, जो इस सिद्धान्त को मानता है कि मनुष्य एक जीवन में, एक जन्म में-दो जीवन जीता है। पहले जन्मदाता--भौतिक माता-पिता, जो इस हाड़मांस के शरीर की रचना करते हैं। दूसरा जन्मदाता-'गुरु' जिनसे दीक्षा लेकर के मनुष्य आत्मसाक्षात्कार करता है। वो दूसरा जन्म दाता है। हमारे धर्म के, इस सिद्धान्त को समझ करके, पढ़ करके और जानकारी के अनुसार, हम सारे के सारे लोग 'गुरु' धारण कर ही रहे हैं। परन्तु गुरु धारण करने से पहले, जो मानसिकता थी, खानपान, रहन-सहन, व्यवहार जो कुछ भी पहले चल रहा था, वैसा ही बाद में चलता रहे। दीक्षा से पहले और दीक्षा के, बाद के जीवन में कोई अन्तर नहीं दिख रहा है तो दूसरा जन्म कोई काल्पनिक स्थिति नहीं हैं वो वस्तु स्थिति है। मनुष्य में क्रियात्मक बदलाव आता है। ये तो मानव धर्म है, मानव-धर्म।

www.the-comforter.org

मेरे शिष्यों में तो सभी जाति के लोग हैं। अब शरीर का सिष्टम तो सबका एक जैसा है। परिवर्तन भी सब में एक जैसा ही आ रहा है। मैं तो कह देता हूँ, हिन्दू कभी धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं रखता है वो तो मनुष्य के रुपान्तरण की बात करता है, मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है। कितने ईसाई, मुसलमान बना लिये, क्या कर लिया? मैं तो कहता हूँ, आप जिस धर्म में हो बैठे रहिये। मगर अपने विकास की एक क्रियात्मक विधि है। उसके अनुसार अपनी शक्तियों को चेतन करके, जीवन में उपयोग लो। 'गुरु' के पास देने-लेने के लिए कुछ नहीं होता है। देखिये मैं आपको बताता हूँ, जो सिस्टम मेरा है, वो आप सब का है। आप जन्म से पूर्ण हो। आपको इसकी जानकारी नहीं है। मैं आपको कुछ नहीं दूँगा। मैं तो आराधना का एक तरीका बताता हूँ, उससे आप अपनी असलियत जान जाओगे कि आप क्या हो? देने-लेने के लिए, किसी के पास कुछ भी नहीं है। बाहर से आपको उम्मीद करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ है-अंदर है, उसको चेतन करने का एक तरीका है।

देखिए ! हिन्दू धर्म जो है-मनुष्य को ईश्वर का स्वरूप मानता है। गीता के 13वें अध्याय में एक श्लोक है-22वाँ, उसमें भगवान् कृष्ण ने मनुष्य की व्याख्या की है, **Defination** की है कि मनुष्य क्या है? तो कहा है कि मनुष्य शरीर में स्थितवाभी 'पर' है, 'पर' का मतलब-त्रिगुणातीत है, ईश्वर है। आगे कहता है परन्तु वह प्रारब्ध कर्म वश कर्ता, भर्ता, भोगता, अनुमन्ता इत्यादि के हिसाब से संसार में व्यवहार कर रहा है, अन्त में कहा है, कि सच्चाई यह है कि वह परमात्मा है तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि मनुष्य, मनुष्य जीवन में अपने उस उच्चतम् विकास को कर सकता है, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। योग दर्शन भी यही कहता है। कैवल्य पद पर पहुँचने की बात करता है, पुरुष ज्ञान प्राप्त करने की बात करता है। कुण्डलिनी महाविज्ञान भी यही कहता है कि कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में पहुँचे उसी का नाम मोक्ष है तो यह क्रियात्मक परिवर्तन है, कोई कल्पना नहीं है तो गुरु एक तरीका बताता है; जिससे साधक आराधना करना शुरू करता है तो उसमें परिवर्तन आना शुरू हो जाता है।

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

दीक्षा

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

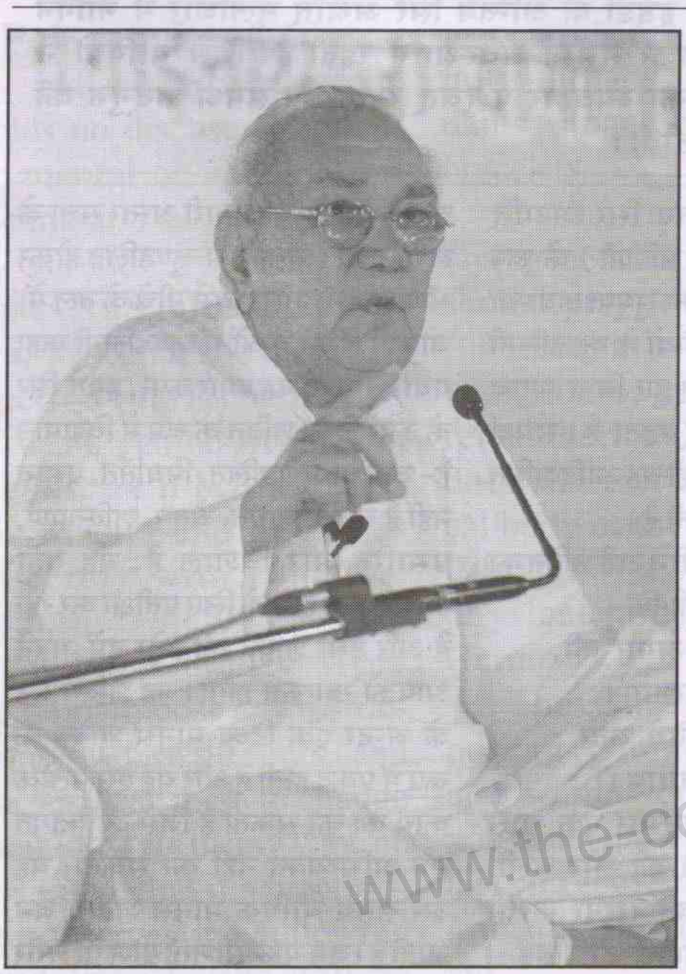

गुरु-शिष्य परम्परा में दीक्षा का, एक विधान है। सभी प्रकार की दीक्षाओं में ''शक्तिपात - दीक्षा'' सर्वोत्तम होती है। इसमें गुरु अपनी इच्छा से, चार प्रकार से शिष्य की शक्ति (कुण्डलिनी) को चेतन करके सक्रिय करता है - (1) **स्पर्श से (2) दृष्टि मात्र से (3) शब्द (मंत्र) से (4) संकल्प मात्र से भी।** दीक्षा के बाद साधक को तत्काल उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति होती है, उस दीक्षा को **''शाम्भवी दीक्षा''** कहते हैं। यह महान् दीक्षा है। बहुत ही थोडे़ साधकों को ऐसी दीक्षा की शक्ति के प्रभाव को सहने की सामर्थ्य होती है।

ऐसे साधकों को पातंजलि योगदर्शन में **''भवप्रत्यय योगी''** की संज्ञा दी है। इस सम्बन्ध में समाधिपाद के 11 वें सूत्र में कहा है-

भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्।
(19-1)

'' विदेह और प्रकृतिलय योगियों का (उपर्युक्त योग) भवप्रत्यय कहलाता है।''

(1) स्पर्श दीक्षाः-इसमें गुरु अपनी शक्ति; शिष्य में तीन स्थानों - भ्रूमध्य में अर्थात् आज्ञा-चक्र में, दूसरा हृदय, तीसरा मेरूदण्ड के नीचे मूलाधार पर स्पर्श करके प्रवाहित करता है।

(2) मंत्र दीक्षाः- गुरु की शक्ति, शिष्य में मंत्र के द्वारा प्रवाहित होती है। 'गुरु' जिस मंत्र की दीक्षा देता है, उसे उसने लम्बे समय तक जपा हुआ होता है। मंत्र शक्ति को आत्मसात किया हुआ होता है। उस मंत्र में और गुरु में कोई अन्तर नहीं रहता। **गुरु का सम्पूर्ण शरीर मंत्रमय बन जाता है, ऐसे चेतन मंत्र की, गुरु जब दीक्षा देता है, वही मुक्ति देता है।**

(3) दृष्टि (हक-दीक्षा):- अर्थात् मात्र दृष्टि द्वारा दी जाने वाली दीक्षा। ऐसी दीक्षा देने वाले गुरु की दृष्टि, **''अन्तर-लक्षी''** होती है। यह दीक्षा वही गुरु दे सकता है, जिसने सद्गुरु से दीक्षा ली हुई हो, और जो स्वयं भी अन्तर लक्षी हो। अन्यथा यह दीक्षा देना पूर्ण रूप से असम्भव है।

ऐसे महात्माओं की आँखें खुली होती है, परन्तु वास्तव में उनका ध्यान निरन्तर अन्तरात्मा की ओर ही लक्षित रहता है। ऐसे संतों की तस्वीर देखने से सही स्थिति का पता लग जाता है। ऐसे संतो में-संत सद्गुरुदेव श्री नानक देवजी महाराज, संत श्री कबीर दासजी, श्री रामकृष्ण परमहंस इत्यादि अनेक संत हमारी पवित्र भूमि में प्रकट हो चुके हैं।

मेरे परम पूज्य, मोक्षदाता संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन) भी उपर्युक्त संतों की स्थिति में पहुँचे हुए, परम-सिद्धयोगी थे। यह सच्चाई सद्गुरुदेव का चित्र देखते ही प्रकट होती है। ऐसे परम दयालु सर्वशक्तिमान, मुक्तिदाता सद्गुरुदेव की, अहैतु की कृपा के कारण ही मेरे जैसे साधारण व्यक्ति में भी वह शक्ति प्रकट हो गई।

(4) मानस (संकल्प-दीक्षा) जिसमें गुरु से दीक्षा लेने का मानस बनाने मात्र से ही दीक्षा मिल जाती हैं। ऐसे कई उदाहरण मुझे मेरे आध्यात्मिक जीवन में देखने को मिले हैं। मेरे अनेक शिष्य हैं, जिनमें कुछ तो अत्यधिक चेतन हैं। उनसे बातें करने से तथा मेरी व गुरुदेव की तस्वीर देखने मात्र से कई लोगों का ध्यान लगने लगता हैं तथा यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगती हैं।

शेष पृष्ठ 16, 17 व 18 पर....

कुण्डलिनी जागरण

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा,सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, जोगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं वही चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढे तीन फेरे (कुण्डली) लगाकर सुषुप्त अवस्था में रहती है। जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत् होती है।

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अन्तर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मनुष्य शरीर में है। जब ऋषियों ने और गहन खोज की तो पाया कि इस जगत् का रचयिता **'सहस्रार'** में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण की संसार की रचना की गई। उस परम पुरूष की शक्ति उसके आदेश से नीचे उतरती गई। इसके चेतन होकर ऊर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है।

गुरु-शिष्य परम्परा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का इस शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परम सत्ता की **'पराशक्ति'** है। अतः यह मात्र उसी का आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस **परमतत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में एक समय में मात्र एक व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। अतः संसार में, एक समय में यह कार्य मात्र एक ही व्यक्ति द्वारा संपन्न हो सकता है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

जिस देवी शक्ति को बाहर हम राधा, सीता, पार्वती, अम्बा, भवानी, जोगमाया, सरस्वती आदि नामों से पूजते हैं। वही परम चेतना हमारे शरीर में, रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे अर्थात् मूलाधार में नागिन (सर्पिणी) के रूप में साढे तीन फेरे लगाकर सुषुप्त अवस्था में रहती है, जिसे योगियों ने कुण्डलिनी कहा है। इसके जाग्रत् हुए बिना मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहता है। समर्थ सद्गुरु की करूणा से ही वह आदि शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

संत कबीरदासजी ने उसी शक्ति का वर्णन करते हुए कहा है कि-

कबीरा धारा अगम की,
सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िये सदा
स्वामी संग लगाय।।

संत मत के अनुसार एक धारा अगम लोक से नीचे की ओर चली, वह सभी लोकों की रचना करती हुई मूलाधार में आकर ठहर गई। इस प्रकार सभी लोक उस जगत् जननी राधा (कुण्डलिनी) ने रचे। मनुष्य जीवन में उसे जाग्रत करके अपने स्वामी (कृष्ण) के पास पहुँचाई जा सकती है। राधा और कृष्ण (पृथ्वी एवं आकाश तत्त्व) के मिलन का नाम ही "मोक्ष" है। परन्तु जिस गुरु को आकाश तत्त्व (कृष्ण) की सिद्धि होती है, मात्र वही इस काम को कर सकता है अन्य कोई नहीं। यह हमारे धर्म शास्त्र व बीते इतिहास से जाना जा सकता है। स्वामी विवेकानंदजी ने अनेक गुरुओं से वार्तालाप किया लेकिन उनमें तत्त्व ज्ञान की जागृति कोई नहीं कर सका। आखिर रामकृष्ण परमहंस के पास ही समाधान हो सका। महर्षि श्री अरविन्द ने कुण्डलिनी को यों वर्णित किया है- यह योगशक्ति है। यह हमारी अन्तर सत्ता के सभी केंद्रों (चक्रों) में कुण्डलित होकर सीधी पड़ी है और सबसे नीचे के तल में, जो रूप है उसे तन्त्रों में कुण्डलिनी कहा गया है। परन्तु यह हमारे ऊपर, हमारे सिर के ऊपर दिव्य शक्ति के रूप में विद्यमान है- वहाँ वह कुण्डलित, निवर्तित, प्रसुप्त नहीं है बल्कि जाग्रत, चेतन, शक्तिपूर्ण, प्रसारित और विशाल है; यह वहाँ अभिव्यक्त होने के लिए प्रतीक्षा कर रही है और इसी शक्ति की ओर हमें अपने आपको खोलना होगा। यह शक्ति मन के अन्दर एक दिव्य मानस शक्ति के रूप में प्रकट होती है और यह ऐसे प्रत्येक कार्य को कर सकती है जिसे व्यक्तिगत मन अभिव्यक्त नहीं कर सकता; यह उस समय यौगिक मानस शक्ति बन जाती है। जब यह उसी तरह प्राण या शरीर में प्रकट होती है और कार्य करती है, तब यह वहाँ एक यौगिक प्राण शक्ति या यौगिक शरीर शक्ति के रूप में दिखाई देती है। यह बाहर की ओर ऊपर की ओर फूट कर तथा नीचे की ओर विशालता में फैलकर, इन सभी रूपों में जाग्रत हो सकती है। अथवा यह अवतरित हो सकती है और वहाँ वस्तुओं के लिए एक सुनिश्चित शक्ति बन सकती है। यह नीचे की ओर शरीर में बरस सकती है। वहाँ कार्य करके, अपना राज्य स्थापित करके, ऊपर से विशालता के अन्दर प्रसारित होकर हमारे अन्दर के सबसे नीचे के भागों को हमारे ऊपर के उच्चतम भागों के साथ जोड़ सकती है, व्यक्ति को एक विराट् विश्वभाव में या निरपेक्षता और परात्परता में ले जाकर मुक्त कर सकती है।

❖❖❖

Religious Revolution in the World

Points to Remember

Indian Yogic Philosophy holds no disease (**physical or mental or spiritual**) as incurable. The Mantra given by Gurudev Siyag to his disciples is a **Sanjeevani Mantra,** which means that even a person who is on the brink of death can be freed from the disease if he/she chants the Mantra and meditates sincerely with complete faith.

While Gurudev Siyag does not impose any restrictions on practitioners, and does not ask them to change their **lifestyle** in any way, he has found that if a practitioner observes the following guidelines he/she will be freed from a problem very quickly :

The practitioner should chant the Mantra round-the-clock that is, as much as possible.

The practitioner must meditate at least two times a day for 15 minutes each time.

The seeker must avoid wearing talismans or any such objects thought to have **magical powers**. They must also get rid of any other spiritual, religious or ritualistic objects on their body such as holy threads, rings, pendants, stones, bangles and bracelets.

During the day and also during meditation, the seeker should pray to Guru Siyag for freedom from disease, addiction or stress. Please remember: **"Guru"** here does not refer to the physical body of the Guru alone. Gurudev Siyag says that the physical body is not the Guru.

The Guru's energy / power is **Omnipresent**, it is also within you. Whenever you wholeheartedly invoke this power to help you, it will immediately come to your aid.

It is not Gurudev Siyag's physical body that cures diseases or gives freedom from addiction and stress. It is the Shakti (energy) or Guru within each person that gives them this freedom. The practitioner must surrender more and more to the Shakti each day.

After receiving the mantra, the practitioner should refrain from following any other Guru or chant any mantra other than the one given by Guru Siyag. If the patient follows other rituals or practices along with Siddha Yoga, his / her faith and energy is divided among all those practices. They then will not be able to practice **Siddha-Yoga** with the kind of intensity that is required for the curing of diseases or freedom from addiction and stress.

If the seeker is on medication, he / she can continue the intake of medicines until they either develop enough confidence toward Siddha Yoga or feel the dependency on medicines reducing.

The more the seeker meditates and chants the Mantra dedicatedly, the faster the body will be free of diseases. However, if the seeker stops meditating and chanting the mantra, the illness will resurface.

Please remember: Freedom from disease, addiction or stress depends completely on the sincerity and dedication with which Siddha Yoga is practiced. In his / her conscience every seeker knows how **truthfully** they are practicing Siddha Yoga.

❖❖❖

Count. .....

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

"हृदय मंथन"

मेरी समझ में कुछ नही आया। मैं यदि समझा तो केवल इतना कि "मैं कुछ नहीं समझा।" महाराजश्री जैसे मेरे मन की बात समझ (जान) गए थे, बोले, "मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया है कि अभी तुम्हारा इस अत्यन्त सूक्ष्म विषय में अधिकार नहीं है। हाँ, दृश्यमान स्थूल जगत् की बात? बादलों का गरजना तथा बिजली का चमकना, कड़कना तुम समझते ही हो।" आश्रम में काफी चहल-पहल थी। थोड़ी ही देर में बंगाली बाबा श्री रामदास ओंकारनाथ आने वाले थे। भारत तथा विदेशों में बाबा के भक्तों तथा शिष्यों की संख्या काफी बड़ी थी।

भक्तिमार्ग के यह महापुरुष अत्यन्त सादे, सरल तथा भावुक थे। पधारने पर दोनों महापुरुषों में बातचीत होने लगी। बाबा कह रहे थे, "हम तो एक प्रेम को ही जानते हैं, भगवान् के चरणों में प्रेम, उस के बनाए सभी जीवों से प्रेम, भगवान् का प्रकट रूप समझ कर जगत् से प्रेम। जिस हृदय में प्रेम हो, उसमें राग-द्वेष कैसे प्रवेश पा सकता है। अन्तर में अपने आप वैराग्य उदय होता जाता है, मन विषयों से हटता जाता है तथा मन में सरसता तथा दिव्यता झलकने लगती है। प्रेम मित्र-शत्रु का भेद मिटा देता है। प्रेमी-भक्त पूर्णतया प्रभु के आश्रित होता है। प्रभु ही उसका सब कुछ होता है। मिलना, नहीं मिलना, कब मिलना, कैसे मिलना, किस रूप में मिलना, यह प्रभु के विचारणीय विषय हैं। भक्त तो प्रभु प्रेम में ही छलका रहता है।"

महाराजश्री ने कहा, " आप कैसी सुन्दर बात कर रहे हैं। जगत् के प्रति वैराग्य तथा प्रभु के प्रति प्रेम यही अध्यात्म का सार है। कोई पहले जगत् से हटता है, उसके उपरान्त प्रभु में प्रेम होता है। कोई पहले मन को प्रेम से भर लेता है, जिसके परिणाम स्वरूप जगत् से वैराग्य हो जाता है। **वैराग्य तथा प्रेम अन्योन्याश्रित हैं। जितना एक बढ़ेगा, उतना दूसरा भी बढ़ेगा। एक के घट जाने से दूसरा भी घट जाएगा।** इसलिए भक्त को भी, प्रेम बनाए रखने के लिये, वैराग्य की भी रक्षा करते रहने के प्रति सजग होना पड़ता है। **अन्यथा वैराग्य का अभाव प्रेम के भाव को मटियामेट कर सकता है,** जिसके लिये जीवन का संयमपूर्वक होना आवश्यक है। भक्ति, ज्ञान, योग, कर्म कुछ भी साधन क्यों न हो, प्रभु-प्रेम सभी के लिए समान आवश्यक है, अन्यथा सब कुछ शुष्क होकर रह जाता है। हृदय का द्वार तो प्रेम से ही खुलता है।"

इस पर बाबा ने प्रश्न किया, "आप शक्तिपात् के आचार्य हैं। आप शक्तिपात् के साधन में प्रेम को किस स्थान पर रखते हैं?" महाराजश्री बोले, "संस्कार, प्रारब्ध तथा वासना, प्रेम तथा वैराग्य के विकास मार्ग में सबसे मुख्य बाधा हैं। इनको हटाए बिना न मन में वैराग्य उदय हो सकता है न हृदय में प्रेम। जैसे जैसे ये शुद्ध होते जाएंगे, प्रेम तथा वैराग्य विकसित होता जाएगा। शक्तिपात् इन्हीं से छुटकारा प्राप्त करने की विद्या है। साधक यदि हृदय में प्रेम-विभोर होकर, मन में दृष्टाभाव में स्थित होकर, शक्ति की क्रियाओं के प्रति समर्पित होता है तो प्रेम-वैराग्य बढ़ने लगते हैं। समर्पण तथा प्रेम में विशेष अन्तर नहीं है। प्रेम में समर्पण होता ही है। आप यूँ भी कह सकते हैं कि समर्पण के बिना प्रेम अधुरा रह जाता है तथा प्रेम बढ़ने के साथ-साथ समर्पण तथा समर्पण बढ़ने के साथ-साथ प्रेम भी बढ़ता जाता है। शक्तिपात् का साधन, समर्पण से आरम्भ होता है जो कालान्तर में, साधन करते-करते प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। यह बात तो साधक के भाव पर आधारित है कि वह कैसे साधन करता है। यदि मन में राग-द्वेष का भाव भरा हो तो उसी की वृद्धि होती जाती है। प्रेम तथा वैराग्य का भाव हो, उसका विकास होता जाता है। **वैसे साधन का उद्देश्य प्रेम तथा वैराग्य का ही विकास करना है।"**

बाबा ने कहा, "कई भक्तों की शक्ति, भजन करते-करते, स्वतः ही जाग्रत हो जाती है, फिर शक्तिपात् की क्या आवश्यकता है?" महाराजश्री ने उत्तर दिया, "शक्तिपात् महत्त्वपूर्ण नहीं, शक्ति जागृति मुख्य है, किन्तु भजन करते-करते कितने लोगों की शक्ति जाग्रत होती हैं? कुछ एक की ही न। जब कि शक्तिपात् में दीक्षित हमारे प्रायः शिष्यों को जागृति प्राप्त है। यह सरलतम उपाय है जिससे अन्तर्शक्ति की क्रियाओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार हो जाता है। साधक की उन्नति उसके साधन तथा भावना पर आधारित है, परन्तु उसका अन्तरद्वार तो खुल जाता है। जिससे उसे बहुत सुगमता प्राप्त हो जाती है।"

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ
'हृदय मंथन-1

क्रमशः अगले अंक में...

योगियों की आत्मकथा

-परमहंस श्री योगानंद

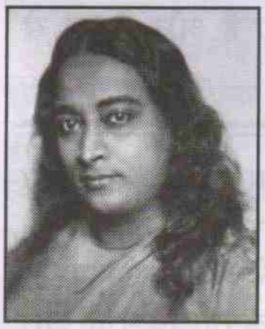

''दार्शनिक महाशय ! तुमने मेरे मन को प्रसन्न कर दिया। अब अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाओ।'' उन्होंने आशीर्वाद-मुद्रा में अपना हाथ उठाया।

मैं गन्धबाबा से कई गज दूर था। कोई अन्य व्यक्ति भी मेरे इतने निकट नहीं था कि मेरे शरीर का स्पर्श कर सके। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया जिसे उस योगी ने छुआ तक नहीं।

''कौन-सी सुगंध चाहिये ?''

''गुलाब।''

''तथास्तु ।''

मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मेरी हथेली के मध्य से गुलाब की मधुर सुगंध तीव्रता के साथ निकलने लगी। मैंने मुस्कराते हुए पास ही की एक फूलदानी से एक गंधहीन श्वेत पुष्प निकाल लिया।

''क्या इस गंधहीन फूल में चमेली की सुगन्ध भरी जा सकती है ?''

''तथास्तु।''

तत्क्षण उस फूल से चमेली की सुगन्ध उठी। मैंने चमत्कारी संत का धन्यवाद किया और उनके एक शिष्य के पास जाकर बैठ गया। उस शिष्य ने मुझे बताया कि गंधबाबा ने, जिनका नाम स्वामी विशुद्धानन्द था, तिब्बत के एक योगी से अनेक आश्चर्यजनक सिद्धियाँ प्राप्त कर ली थीं। उसने मुझे यह भी बताया कि उस तिब्बती योगी की आयु एक हजार वर्ष से अधिक थी।

''उस महान् गुरु के शिष्य गंधबाबा हमेशा ही केवल साधारण उच्चारण से सुगंध निर्माण नहीं करते जैसा तुमने अभी देखा।'' शिष्य के बोलने में अपने गुरु के प्रति गर्व प्रकट था। ''व्यक्ति के स्वभाव के अनुसार वे भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ अपनाते हैं। बाबा असामान्य हैं ! कोलकाता के अनेक पढ़े-लिखे लोग उनके शिष्य हैं।''

मैंने मन ही मन निश्चय किया कि मैं उन शिष्यों की संख्या में अपने को जोड़कर उस संख्या की और अधिक वृद्धि नहीं करूँगा। गुरु का अक्षरशः ''असामान्य'' होना, मेरे मन के अनुकूल नहीं था। विनम्रता से गंधबाबा का अभिवादन कर, मैं वहाँ से निकल पड़ा। घूमते-घूमते घर जाते हुए मैं उस दिन की तीन विविधतापूर्ण घटनाओं के विषय में सोच रहा था।

मैंने जैसे ही घर के द्वार से अन्दर प्रवेश किया, मेरी बहन उमा सामने ही खड़ी थी।

''क्या बात है ? आजकल तुम इत्र के बड़े शौकीन बनते जा रहे हो ?''

बिना कुछ बोले मैंने अपना हाथ बढ़ाकर उसे सूँघने का इशारा किया।

''कितनी मोहक गुलाब की सुगन्ध ! और यह असाधारण रूप से तीव्र भी है !''

यह सोचते हुए कि यह ''तीव्र रूप से असाधारण'' है, मैंने चुपचाप दैवी रूप से सुगंधित किया गया फूल उसकी नाक के नीचे रखा।

''ओह ! चमेली मुझे बहुत पसन्द है !'' उसने फूल छीन लिया। जिस फूल के विषय में उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि वह गंधहीन होता है, उसी फूल में से चमेली की सुगंध आते देखकर, जैसे-जैसे वह उसे सूँघती जाती थी वैसे-वैसे उसके चेहरे पर विनोदी लगनेवाले संभ्रम के भाव प्रकट होते जाते थे। उसकी इस प्रतिक्रिया ने मेरे मन से रहा-सहा सन्देह भी मिटा दिया कि हो सकता है गन्धबाबा ने मुझपर आत्मसम्मोहन का प्रयोग किया हो जिससे केवल मैं ही सुगन्ध का अनुभव कर सकूँ।

बाद में मुझे अपने एक मित्र अलकानंद से पता चला कि गंधबाबा के पास ऐसी शक्ति भी थी जो यदि संसार के करोड़ों क्षुधा-पीड़ितों के पास होती, तो उनकी समस्या हल हो जाती।

''बरद्वान में गंधबाबा के घर में उस समय सैंकड़ों लोगों में मैं भी उपस्थित था,'' अलकानंद ने मुझे बताया। ''एक उत्सव था। योगीवर की ख्याति थी कि वे शून्य में से कुछ भी उत्पन्न कर सकते हैं, इसलिये मैंने हँसते हुए उनसे संतरे उत्पन्न करने का अनुरोध किया। वह संतरों का मौसम नहीं था। तत्क्षण ही केले के पत्तों पर जो पूरियाँ परोसी गयी थीं, वे सब फूल उठीं। हर पूरि की पपड़ी के भीतर एक-एक छिला हुआ संतरा आ गया था। मैंने कुछ सहमे-सहमे मन से अपना संतरा खाना शुरू किया, परन्तु वह बड़ा ही स्वादिष्ट था।''

लेकिन सद्गुरुदेव सियाग की आराधना ऐसी सिद्धियाँ के लिए नहीं है। यह मनुष्य का आतंरिक विकास करती है।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

योग के बारे में

-महर्षि श्री अरविन्द

हमारा काम है इन द्वित्तों के कारणों को भंग करके उन्हें विलीन कर देना। अपने-आप भागवत आनन्द के सागर में डुबकी लगाना जो एक और बहु, सम है, जो सभी चीजों में आनन्द लेता है और किसी से दुःख-दर्द के साथ पीछे नहीं हटता।

चेतना की इस व्यवस्था में निचला गोलार्द्ध तीन वैदिक व्याहृतियों से बना हैः भूर, भुवर, स्वर। ये चेतना की अवस्थाएँ हैं जिनमें उच्चतर जगत् के तत्त्व प्रकट होते हैं या अपने-आपको विभिन्न स्थितियों में प्रकट करने की कोशिश करते हैं। वे अपने, निजधाम में शुद्ध होते हैं लेकिन इस पराये देश में विकृत, अशुद्ध और गड़बड़ करने वाले संयोजनों और क्रियाओं के अधीन हो जाते हैं।

जीवन का अन्तिम लक्ष्य है विकृति, अशुद्धि और गड़बड़ों से छुटकारा पाना और उन्हें पूरी तरह से इन दूसरी स्थितियों में प्रकट करना।

इस धरती पर हमारा जीवन एक दिव्य कविता है जिसे हम पार्थिव भाषा में अनूदित कर रहे हैं या संगीत की एक धुन है जिसमें हम शब्द बिठा रहे हैं। सत् में सत्ता, बहु में एक है, ऐसा एक जो अपनी बहुलता में खोये या परेशान हुए बिना उसे देखता है, ऐसी बहुलता जो विश्व में बहु के खेल की शक्ति खोये बिना, अपने-आपको एक जानती है।

मन, प्राण और शरीर की परिस्थितियों में अहंकार उत्पन्न होता है और मिथ्या रूप में चेतना के आत्मनिष्ठ या वस्तुनिष्ठ रूप को स्वयंभू सत्ता, शरीर को स्वतंत्र व्यक्तित्व वास्तविकता और अहं को स्वतंत्र व्यक्तित्व मान लिया जाता है। एक अपने-आपको हमारे अंदर बहुलता में खो देता है और जब वह अपने एकत्व को वापस पा लेता है तो मन के स्वभाव के कारण उसे बहु की लीला जारी रखना कठिन लगता है। अतः जब हम संसार में लीन होते हैं तो भगवान् को उनके रूप में खो देते हैं और जब भगवान् को देखते हैं तो हम उन्हें जगत् के अंदर खो देते हैं। हमारा काम है इस मानसिक अहंकार को तोड़कर विलीन कर देना और विश्व में अपनी व्यक्तिगत और बहुल सत्ता की शक्ति को खोये बिना अपने दिव्य ऐक्य में लौट जाना।

चित् में चेतना स्वतंत्र, प्रकाशमान, असीम और प्रभावकारी होती है, जिसके बारे में वह चित् के रूप में अभिज्ञ है (ज्ञान शक्ति) उसे वह अमोघ तपस् के रूप में (क्रिया शक्ति) सम्पन्न करती है। क्योंकि ज्ञान शक्ति केवल स्थायी और व्यापक है, क्रिया शक्ति केवल स्वयं प्रकाशमान सचेतन सत्ता का गतिशील और तीव्र रूप है।

वे भगवान् की चित् शक्ति की एक शक्ति हैं। (सत् पुरुष की चिच्छक्ति हैं) लेकिन निम्नार्द्ध में, मन, प्राण और शरीर की अवस्थाओं में प्रकाश विभक्त हो जाता है और असमान किरणों में बंट जाता है, स्वाधीनता अहंकार की बेड़ियों में पड़कर असमान रूपों में फंस जाती है। और असमान शक्तियों का खेल उनकी सामर्थ्य पर परदा डाल देता है। इसलिये हमारे अंदर चेतना, निश्चेतना और मिथ्या चेतना, ज्ञान, अज्ञान और मिथ्या ज्ञान, समर्थ शक्ति, जड़ता और असमर्थ शक्ति की अवस्थाएँ होती हैं। हमारा काम है अपनी विभक्त और असमान वैयक्तिक कार्य और विचार शक्ति को त्याग कर काली की एक अविभक्त वैश्व चित् शक्ति को अपने अहंकारपूर्ण क्रियाकलाप के स्थान पर अपने शरीर में वैश्व काली लीला को स्थान दें और इस प्रकार अंधता और अज्ञान के बढ़ते हुए ज्ञान और प्रभाव शून्य मानव बल की जगह भगवान् की समर्थ शक्ति को ले आयें।

आनन्द में उल्लास शुद्ध, अमिश्रित, एक और फिर भी बहुसंख्यक होता है। मन, प्राण और शरीर को अवस्थाओं के अधीन वह विभक्त, सीमित, अस्तव्यस्त और दिग्भ्रान्त हो जाता है और असमान शक्तियों के धक्कों और आनन्द के असमान वितरण के कारण सकारात्मक और नकारात्मक गतियों, दुख-सुख, हर्ष और पीड़ा के द्वित्त के अधीन हो जाता है।

हमारा काम है इन द्वित्तों के कारणों को भंग करके उन्हें विलीन कर देना। अपने-आप भागवत आनन्द के सागर में डुबकी लगाना जो एक और बहु, सम है, जो सभी चीजों में आनन्द लेता है और किसी से दुःख-दर्द के साथ पीछे नहीं हटता।

संदर्भ-श्री अरविन्द,
'मानव से अतिमानव की ओर'

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

"योग के आधार"

-श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा, आत्मसमर्पण

शायद ही कोई इतना बलवान् होता है कि वह बिना किसी सहायता के केवल अपनी ही अभीप्सा और संकल्प शक्ति के बल पर निम्नतर प्रकृति की शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सके; और वे लोग भी जो ऐसा करते हैं, **केवल एक प्रकार का संयम ही प्राप्त करते है, पूर्ण प्रभुत्व नहीं।**

भागवत शक्ति की सहायता को नीचे उतार लाने तथा निम्नतर शक्तियों के ऊपर जब वह शक्ति क्रिया करती है तब उसके पक्ष में अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिये संकल्प और अभीप्सा की आवश्यकता होती हैं पर एकमात्र भागवत शक्ति ही हमारे आध्यात्मिक संकल्प और हृदयस्थित अंतःपुरुष की अभीप्सा को सार्थक करती हुई यह विजय ले आ सकती है।

मानव-प्रकृति या व्यक्तिगत प्रकृति की प्रवृत्ति के विरुद्ध जब कुछ करने का प्रयत्न किया जाता है, तब उसे मानसिक संयम के द्वारा करना सर्वदा ही कठिन होता है। अगर धैर्य और अध्यवसाय के साथ अपने सुदृढ़ संकल्प को लक्ष्य की ओर लगाये रखा जाये तो उससे एक प्रकार का परिवर्तन साधित हो सकता है, पर साधारणतया इसमें बहुत दीर्घ समय लग जाता है ओर सफलता भी आरंभ में केवल आंशिक तथा अनेक विफलताओं से मिली-जुली हो सकती है।

केवल अपने विचारों को संयमित कर कोई साधक अपने सारे कर्मों को स्वभावतः पूजा के रूप में नहीं परिणत कर सकता; इसके लिये साधक के हृदय में एक ऐसी प्रबल अभीप्सा होनी चाहिये जो **एकमेवाद्वितीय** की उपस्थिति की कुछ उपलब्धि या अनुभूति ले आ सके जिसे वह पूजा अर्पित की जाती है। भक्त एकमात्र अपने ही प्रयास पर निर्भर नहीं करता; बल्कि वह जिस भगवान् की आराधना करता है उसकी कृपा और शक्ति के ऊपर निर्भर करता है।

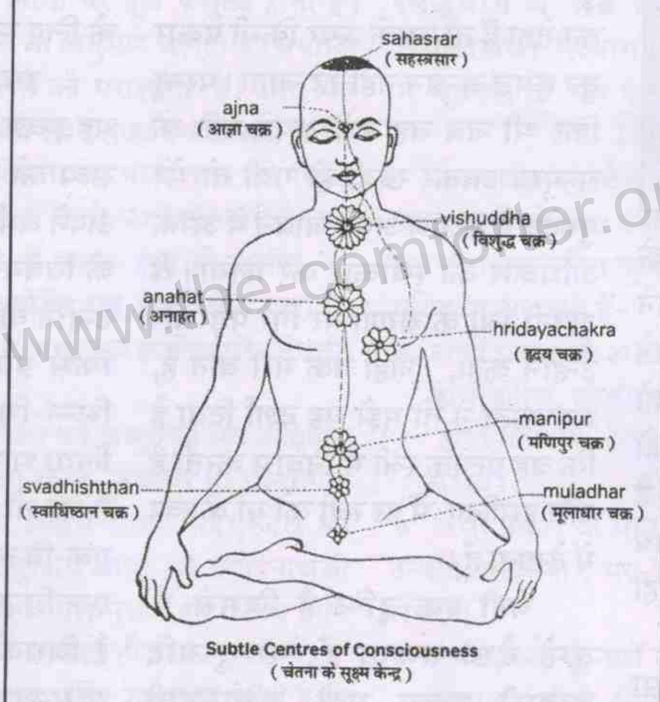

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

तुम सदा से ही अपने मन और संकल्प-शक्ति की क्रिया के ऊपर अत्यधिक भरोसा रखते आ रहे हो - यही कारण है कि तुम अग्रसर नहीं हो पाते। यदि तुम मां की शक्ति पर चुपचाप भरोसा बनाये रखने की आदत एक बार डाल सके - केवल अपने ही प्रयास को सहारा देने के लिये उनकी शक्ति का आवाहन न करो - तो तुम्हारी बाधा कम हो जायेगी ओर अंत में एकदम दूर हो जायेगी।

सभी सच्ची अभीप्साएं सफल होती हैं। अगर तुम अपनी अभीप्सा में सच्चे हो तो तुम अवश्य ही धीरे-धीरे दिव्य जीवन प्राप्त करोगे।

पूर्ण रूप से सच्चे होने का अर्थ है एकमात्र भागवत सत्य की इच्छा करना, मां भगवती को अधिकाधिक आत्मसमर्पण करते रहना, इस एक अभीप्सा के अतिरिक्त अन्य सभी व्यक्तिगत माँगों और कामनाओं का त्याग करना, जीवन के प्रत्येक कर्म को भगवान् के चरणों में अर्पित करना, प्रत्येक कर्म को भगवत्प्रदत्त समझकर करना और उसमें भी कहीं अहंकार को न आने देना। यही दिव्य जीवन का आधार है।

परंतु एकबारगी ही कोई साधक पूरा-पूरा ऐसा नहीं हो सकता। किंतु कोई साधक सर्वदा अभीप्सा करता रहे और सच्चे हृदय तथा सरल संकल्प के साथ सर्वदा भागवत शक्ति की सहायता को पुकारता रहे तो वह अधिकाधिक इस चेतना को प्राप्त करता जायेगा।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

! ! मेरे गुरुदेव ! !

-स्वामी विवेकानन्द

''आपको सांसारिक जीवन में घसीटने की मेरी इच्छा कदापि नहीं, बस, इतना ही चाहती हूँ कि मैं आपके समीप रहूँ, आपकी सेवा करूँ तथा आपसे शिक्षा ग्रहण करूँ।'' वह मेरे गुरुदेव के अन्यतम भक्त शिष्यों में से एक बनी और उनको साक्षात् ईश्वर मानकर उनकी सेवा-पूजा करने लगी। इस प्रकार अपनी धर्मपत्नी की अनुमति से उनका अंतिम यकीन भी टूट गया और वह अपने मनोनीत पथ पर चलने के लिए स्वतंत्र हो गए।''

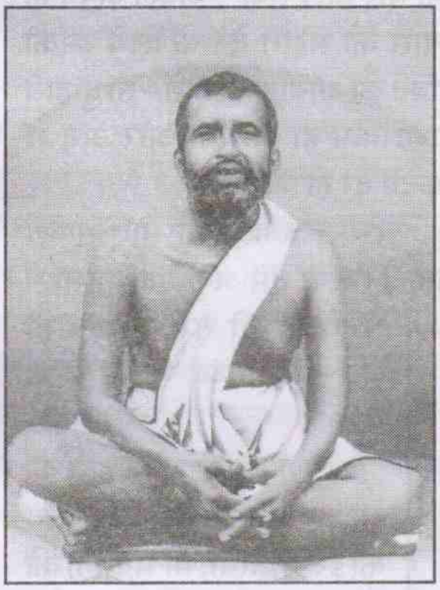

परन्तु यह बालक विवाह के उपरान्त घर पर न रहकर फिर अपने काम पर वापस आ गया तथा अपने उन्माद में और भी अधिक तन्मय हो गया।कभी-कभी हमारे देश में लड़कों का विवाह बचपन में ही हो जाता है और उस सम्बन्ध में उनकी कोई राय नहीं ली जाती। उनके माता-पिता ही उनका विवाह कर देते हैं।

यह बात अवश्य है कि ऐसा विवाह सगाई से बहुत भिन्न नहीं होता। विवाह के पश्चात् भी वे अपने माँ-बाप के यहाँ रहते हैं और सच्चा विवाह उस समय होता है, जब लड़की सयानी हो जाती है। उस समय यह रिवाज कि वर, वधू के घर जाकर उसे अपने साथ अपने घर लिवा लाता है। परन्तु इस विवाह के बारे में मेरे गुरुदेव यह बिल्कुल भूल ही गये थे कि उनकी स्त्री भी हैं। अपने मायके में लड़की ने यह भी सुन रखा था कि उसके पति को धर्मोन्माद हो गया है और उन्हें कुछ लोग पागल भी समझते हैं, उसने ठीक-ठीक बात का स्वयं पता लगाने का निश्चय किया। वह अपने घर से निकल पड़ी और उस स्थान पर आयी, जहाँ उसका पति था।

भारत में यदि कोई स्त्री अथवा पुरुष धर्म के लिए अपना **जीवन अर्पण** कर देता हैं तो उसके ऊपर किसी प्रकार का दूसरा बन्धन नहीं रह जाता। परन्तु फिर भी जब वह स्त्री अपने पति के सम्मुख आकर खड़ी हो गयी तो मेरे गुरुदेव ने तत्क्षण अपने जीवन में उसके अधिकार को स्वीकार कर लिया। वे अपनी स्त्री के चरणों पर गिर पड़े और उन्होंने कहा, ''जहाँ तक मेरी बात है, जगन्माता ने तो मुझे यह दर्शा दिया है कि वह प्रत्येक स्त्री में निवास करती है और इसलिए मैं हर स्त्री को माँ के रूप में देखता हूँ।

यही एक दृष्टि है जिससे मैं तुम्हें देखा सकता हूँ, परन्तु यदि तुम्हारी इच्छा मुझे संसाररूपी मायाजाल में खींचने की हो, क्योंकि मेरा तुझसे विवाह हो चुका है तो मैं तुम्हारी सेवा में उपस्थित हूँ।'' वह बालिका अत्यन्त पवित्र तथा उदार हृदय की थी, और वह अपने पति की आकांक्षाओं को समझ सकी तथा उनसे सहानुभूति कर सकी। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया, ''आपको सांसारिक जीवन में घसीटने की मेरी इच्छा कदापि नहीं, बस, इतना ही चाहती हूँ कि मैं आपके समीप रहूँ, आपकी सेवा करूँ तथा आपसे शिक्षा ग्रहण करूँ।'' वह मेरे गुरुदेव के अन्यतम भक्त शिष्यों में से एक बनी और उनको साक्षात् ईश्वर मानकर उनकी सेवा-पूजा करने लगी। इस प्रकार अपनी धर्मपत्नी की अनुमति से उनका अंतिम यकीन भी टूट गया और वह अपने मनोनीत पथ पर चलने के लिए स्वतंत्र हो गए

इसके अनंतर इन महापुरुष की यह इच्छा हुई कि वह विविध धर्म का सत्य को जाने उस समय तक उन्होंने अपने धर्म के अतिरिक्तकिसी दूसरे धर्म के विषय में कुछ भी नहीं जाना था। उन्होंने यह जानना चाहा कि दूसरे धर्म किस प्रकार के हैं ? अतः उन्होंने भिन्न-भिन्न धर्मों के गुरुओं का आश्रय लिया भारत में गुरु का अर्थ क्या होता है यह तो मुझे जान लेना चाहिए। गुरु एक किताबी कीड़ा नहीं होता बल्कि एक सिद्ध पुरुष, एक ऐसा व्यक्तिहोता है जिसको परम सत्य का ज्ञान किसी मध्यस्थ द्वारा नहीं वरन प्रत्यक्ष अनुभूति द्वारा प्राप्त हो चुका हो। उन्हें एक मुसलमान साधु मिल गया और वह उसी के साथ रहने लगे और उसने जो जो साधनाएँ बतलाई, उन सबको उन्होंने पूर्ण किया। मेरे गुरुदेव को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस धर्म की भक्तिपार्क पद्धतियों को श्रद्धा पूर्वक करने से भी उन्हें उसी लक्ष्य की प्राप्ति हुई, जिसे वह पहले ही पा चुके थे। संदर्भ-विवेकानंद वॉल्यूम-7

क्रमशः अगले अंक में...

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता की पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय** में, मात्र **एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-आदि **भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सदगुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्ति पात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की **एकाग्रता** एवं **याददाश्त** में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए **'भोग एवं मोक्ष'** दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।
- वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार।

❖❖❖

परन्तु ऐसे शिष्य बहुत कम ही हैं। इस तथ्य से एकलव्य की प्रतीक-साधना सत्य प्रमाणित होती है।

हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती, तब तक मोक्ष नहीं होता। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही मोक्ष है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। सिद्धयोग अर्थात् महायोग में शक्तिपात-दीक्षा द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है। गुरु की व्याख्या करते हुए कहा गया है- ''वह शिष्यों को उनके अन्तर में प्रभावी किन्तु सुप्त शक्ति (कुण्डलिनी) को जाग्रत करता है और साधक को उस परमसत्य से साक्षात्कार-योग्य बनाता है।

''कुण्डलिनी जागरण के सम्बन्ध में कहा है -

''यावत्सा निद्रिता देहे
तावत जीवः पशुर्यथा।
ज्ञानम् न जायते
तावत कोटियोग-विधैरपि।''

स्वामी विष्णु तीर्थ - शक्तिपात।।

''जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत् रहेगा। और वह उस दिव्य-परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।'' गुरु कृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है ? इस सम्बन्ध में कहा है -

सुप्त गुरु प्रसादेन
यदा जागृति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि
भिदयन्ति ग्रन्थयो पि च।।

(''स्वात्माराम, हठयोग प्रदीपिका''-3,2)

''जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रन्थियों का (ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि और रूद्रग्रन्थि) भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं। शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियन्त्रित और अनुशासित करता है।

कुण्डलिनी को हमारे शास्त्रों में **'जगत् जननी'** कहा है। वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, जो **सर्वज्ञ है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान** है। अतः जिस साधक की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, उसे अनिश्चितकाल तक के भूत-भविष्य एवं वर्तमान काल की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार होने लगता है।

भौतिक विज्ञान मानता है कि जो शब्द बोला जा चुका है, वह कभी नष्ट नहीं होता। अगर मानव के पास उपयुक्त यन्त्र हो तो उसे पुनः सुना जाना सम्भव है। हमारा योगदर्शन कहता है कि केवल सुना ही नहीं जा सकता है, बोलने वाले को बोलते हुए देखा-सुना जाना भी सम्भव है। जो फिल्म बन चुकी है, उसको देखने-सुनने में क्या कठिनाई है।

हमारा योग-दर्शन तो स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जो घटना नहीं घटी है, उसको भी देखा व सुना जाना संभव है। अनेक शिष्य इसको प्रमाणित करने में सक्षम हैं। हमारा पतंजलि योगदर्शन उपर्युक्त तथ्यों को प्रमाणित करता है। इसी शक्तिपात-दीक्षा के कारण ही पश्चिम को दिव्य आनन्द और अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार होगा, बाइबल की भविष्यवाणियों का मात्र यही अर्थ है।

प्रेरितों के कार्य के 2:14 से 18 में स्पष्ट शब्दों में कहा है - '' पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, कि हे यहूदियों, हे यरूशलेम के सब रहने वालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में है , ऐसा नही, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है।

परन्तु यह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है ! कि परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए (वृद्ध) स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उड़ेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।''

इसी संदर्भ में, जिस सहायक के भेजने की भविष्यवाणी यीशु ने की है, उसी की शक्तिपात-दीक्षा के कारण यह दिव्य-आनन्द और ज्ञान प्राप्त होगा। इस सम्बन्ध में प्रेरितों के कार्य 2:33 में कहा है - ''इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उँड़ेल दिया है, जो तुम देखते और सुनते हो।''

इस शक्तिपात-दीक्षा का वर्णन अनेक दार्शनिक ग्रन्थों में मिलता है। जैसा कि स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने

कहा है, "यह ज्ञान मात्र हमारे दर्शन की ही देन है।" परन्तु कलियुग के गुणधर्म के कारण यह दिव्य विज्ञान इस समय हमारी धरती पर से लोप प्रायः हो चुका है। शक्तिपात-दीक्षा के बाद, मेरे साधकों की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। इससे उन्हें विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे:- आसन, बन्ध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः होने लगते हैं। वह शक्ति (कुण्डलिनी) साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने स्वायत(अधीन) कर लेती है।

इस प्रकार साधक को जो विभिन्न प्रकार के आसन्न, बन्ध, मुद्राएँ और प्राणायाम होते हैं, उनमें साधक का स्वयं का प्रयास कुछ भी नहीं रहता है। न तो वह उन्हें करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों को इस दिव्य विज्ञान के कारण, अनेक समस्याओं का समाधान करने में भारी सफलता मिलेगी। **कुण्डलिनी (चित्ति) उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है।** अतः उसमें ज्ञान की "**पराकाष्ठा**" है। वह अजर-अमर है तथा सर्वज्ञ एवं सर्वत्र है। अतः उसके जाग्रत होने पर साधक को भूत, भविष्य एवं वर्तमान की पूर्ण जानकारी होने में कोई आश्चर्य नहीं है। ईश्वर को सच्चिदानन्द धन (सत् चित् व आनन्द) कहते हैं।

अतः कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर साधक को इन्द्रियातीत दिव्य अक्षय आनन्द की निरन्तर प्रत्यक्षानुभूति होने लगती है। इस दिव्य आनन्द के सामने सभी प्रकार के नशों से घृणा हो जाती है और बिना किसी प्रकार के कष्ट के, उनसे सहज रूप में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है। मेरे साधकों में बहुत लोग ऐसे हैं जो शराब, अफीम, भांग, गांजा आदि के नशों से बुरी तरह ग्रसित थे। इस दिव्य आनन्द के कारण सभी साधक उन सभी प्रकार के नशों से, बिना किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट या मानसिक कष्ट के पूर्ण रूप से मुक्त हो चुके हैं।

यही नहीं इस दिव्य आनन्द के कारण मानसिक तनाव पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है तथा उससे सम्बन्धित सभी रोग जैसे उन्माद, रक्तचाप, अनिद्रा आदि बिना दवा के स्वतः पूर्णरूप से खत्म हो जाते हैं। विद्युत उपचार से ठीक न होने वाले कई रोगी पूर्ण रूप से रोग मुक्त हो चुके

हैं। दो ऐसे रोगी आये जो इन्सुलीन चिकित्सा से भी ठीक नहीं हो सके थे, इस शक्तिपात-दीक्षा से मिलने वाली आनन्द रूपी शान्ति के कारण पूर्णरूप से स्वस्थ हो चुके हैं। हमारे दर्शन में योगदर्शन के अतिरिक्त भी इस दिव्य आनन्द का वर्णन मिलता है। गीता के 5 वें अध्याय के 21 वें तथा 6 वें अध्याय के 15 वें 21वें 27 वें तथा 28 वें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस बारीकी से इस दिव्य आनन्द की व्याख्या की है, अन्यत्र कहीं नहीं मिलती।

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा
विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
सुखमक्षयमश्नुते ।। 5:21।।

"बाहर के विषयों में आसक्ति रहित अन्तःकरण वाला पुरूष अन्तःकरण में जो भगवत्-ध्यान जनित आनन्द है, उसको प्राप्त होता है (और) वह पुरूष सच्चिदानन्दधन परब्रह्म परमात्मारूप योग में एकीभाव से स्थित हुआ, अक्षय आनन्द को अनुभव करता है।"

युञ्जन्नेवं सदात्मानं
योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां
मत्संस्थामधिगच्छति ।। 6:15 ।।

"इस प्रकार आत्मा को निरन्तर (परमेश्वर के स्वरूप में) लगाता हुआ स्वाधीन मनवाला योगी मेरे में स्थित रूप परमानन्द पराकाष्ठा वाली शान्ति को प्राप्त होता है।"

सुखमात्यन्तिकं यत्तद
बुद्धि ग्राह्यमतीन्द्रियम।
वेत्ति यत्र न चैवायं
स्थितश्चलति तत्त्वतः।।
6:21 ।।गीता

"इन्द्रियों से अतीत केवल शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा ग्रहण करने योग्य जो अनन्त आनन्द है, उसको जिस

अवस्था में अनुभव करता है और जिस अवस्था में स्थित हुआ यह योगी भगवत स्वरूप से चलायमान नहीं होता है।''

प्रशान्तमनसं ह्येनं
योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं
ब्रह्मंभूतमकल्मषम्।। 6:27।।

''क्योंकि जिसका मन अच्छी प्रकार शान्त है (और) जो पाप से रहित है (और) जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दनधन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को अति उत्तम आनन्द प्राप्त होता है।''

युञ्जन्नेवं सदात्मानं
योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्श
मत्यन्तं सुखमश्नुते ।।
6:28।।

''पापरहित योगी इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ, सुखपूर्वक परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द को अनुभव करता हैं।''

वैदिक मनोवैज्ञानिक (अध्यात्म विज्ञान) के अनुसार मनुष्य का शरीर सात प्रकार के कोशों (शैलों) से संघटित हैं, जिनके खोलों (कोशों) में आत्मा अन्तर्निहित है। वे हैं- **(1) अन्नमय कोश (2) प्राणमय कोश (3) मनोमय कोश (4) विज्ञान मय कोश (5)आनन्दमय कोश (6) चितमय कोश (7) सतमय कोश।** हमारे विकास की वर्तमान अवस्था में साधारण मानव ने अपने नित्य व्यवहार के लिए पहले तीन कोशों का ही विकास किया है।

कुछ मनुष्य सामर्थ्यपूर्वक विज्ञानमय कोश का प्रयोग करने में भी सक्षम है। **क्योंकि इस समय विज्ञान अपने निज धाम से संचालित न होकर, बुद्धिप्रधान मन में स्थित होकर कार्य करता है।** यही कारण है, विज्ञान सृजन के स्थान पर विध्वंश का कार्य अधिक कर रहा है। योगी इससे भी परे साक्षात् विज्ञान (विज्ञानमय कोश के निजधाम) तक जा पहुँचता है। जब विज्ञान अपने निजधाम में संचालित होकर कार्य करेगा, तब इसका सम्पूर्ण उपयोग मात्र सृजन में ही होगा। इसीलिए महर्षि श्री अरविन्द ने भविष्यवाणी की है

''भारत, जीवन के सामने योग का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है। वह योग के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और योग के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।''

याज्ञवल्क्य जैसे महानतम ऋषि तो साक्षात् आनन्द तक पहुँच चुके हैं। परन्तु अन्तिम दो कोश अभी तक प्राप्त नहीं हो सके हैं। सिद्धयोग अर्थात् महायोग जो गुरु कृपारूपी शक्तिपात दीक्षा से सिद्ध होता है, उसके साधक सातों कोशों का ज्ञान प्राप्त करने में सफल हुए हैं।

ऐसे अनेक उदाहरण हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं। पतंजलि योग दर्शन तो केवल 195 सूत्रों में कैवल्य पद पर पहुँचने की क्रियात्मक विधि बताता है।

''मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।'' सभी का मत है कि मानव का सृजन उसके सृजनहार की प्रतिमूर्ति के रूप में हुआ है। **अतः मनुष्य अपना क्रमिक विकास करते हुए अपने सृजनहार के 'तद्रूप' बन सकता है।** भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य की व्याख्या करते हुए गीता के 13 वें अध्याय के 22 वें श्लोक में स्पष्ट शब्दों में कहा है-

उपदष्टानुमन्ता च
भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो
देहे स्मिन्पुरूषः परः।।

''पुरूष इस देह में स्थित हुआ भी पर (त्रिगुणातीत) है। (केवल) साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता एवं सबको धारण करने वाला होने से भर्ता, जीव रूप से भोक्ता तथा ब्रह्मादिकों का भी स्वामी होने से महेश्वर और शुद्ध सच्चिदानन्दधन होने से ''परमात्मा'' ऐसा कहा गया है।''

इस इन्द्रियातीत आनन्द को संतों ने ''हरि नाम की खुमारी'' की संज्ञा दी है। संत सद्गुरु श्री नानकदेवजी ने कहा है-

''भांग धतुरा नानका,
उतर जाय प्रभात।
''नामखुमारी '' नानका
चढ़ी रहे दिन रात।।''

संत कबीर दास जी ने कहा है-

'नाम-अमल' उतरै न भाई।
और अमल छिन्न-छिन्न चढ़ि उतरै।
नाम -अमल' दिन बढ़ै सवायो।।''

बाइबल भी स्पष्ट कहती है- ''यह एक आन्तरिक आनन्द है, जो सभी सच्चे विश्वासियों के हृदय में आता है। यह आनन्द हृदय में बना रहता है, सांसारिक आनन्द से तब तक भरता है, जब तक उमड़ न जाय। प्रभु का आनन्द जो हमारे हृदयों में बहता है, हमारे हृदयों से उमड़ कर दूसरों तक बह सकता है।''

यह आनन्द ही शान्ति स्थापित करेगा।

रायपुर (छत्तीसगढ़)-मूक बधिर विद्यालय में सद्गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान कराया, स्वत: हुआ योग, साधकों ने बताए अनुभव। उनके शिक्षकों ने उनके हावभाव जानकर, जानकारी दी। (20 अगस्त 2018)

डीडवाना (नागौर) में सिद्धयोग शिवरों का आयोजन कर हजारों विद्यार्थियों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराकर ध्यान कराया गया। (9 से 21 अगस्त 2018)

नागौर जिले की डीडवाना तहसील के ग्रामीण इलाकों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (22-24 अगस्त 2018)

संजीवनी मंत्र का अद्भुत कमाल

घुटनों का ऑपरेशन टला, पैर कटने से बच गये।

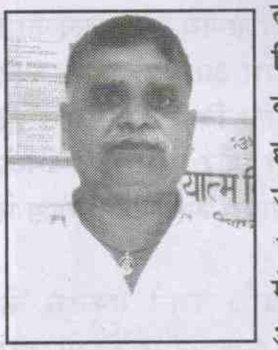

मेरा नाम रामभरोसे यादव है, तहसील-राजगढ़ जिला-अलवर का रहने वाला हूँ। मैं यहाँ जोधपुर में सन् 1980 से रेलवे में कार्यरत हूँ। अचानक मेरे जीवन में कुछ दुःखद दिन आए और सन् 2007 के आस-पास मेरे दाएं पैर के घुटने में दर्द होने लगा तथा पैर घुटने से मुड़ना बंद हो गया, पैर सीधा ही रहता था। मुड़ता बिल्कुल भी नहीं था। ऐसा हुआ जैसे किसी ने लोहे के तार को सीधा करके वैल्डिंग कर दिया हो। मैं लगभग छः महिने तक चारपाई पर पड़ा रहा। बहुत दुःखी था। असहनीय दर्द होता था।

मैंने जोधपुर के लगभग सारे डॉक्टरों को दिखा दिया। जिनको भी दिखाया, उन्होंने अपने अपने हिसाब से दवाईयों बदल बदल कर दी लेकिन कोई आराम नहीं मिला।

जहाँ भी कहीं से सुन लिया वहीं इलाज कराने पहुँच जाता था। इसी कड़ी में अजमेर के एक डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने जाँच करने के बाद दवाईयाँ दी और कहा कि यह दवाईयाँ लो इससे कुछ फायदा होता है तो ठीक, नहीं तो पैर का ऑपरेशन होगा। हो सकता है पैर ठीक भी हो जाये और नहीं तो फिर पैर काटना पड़ेगा और एक पैर काटा तो कुछ समय बाद दूसरा भी काटना पड़ सकता है। तकरीबन एक लाख रूपये से भी ज्यादा की दवाईयाँ खाने के उपरान्त भी मेरे पैर में थोड़ा-सा भी फायदा नहीं हुआ।

फिर मैंने देशी आयुर्वेदिक दवाईयाँ भी ली, परन्तु उससे भी कोई आराम नहीं मिला।

अध्यात्म विज्ञान से स्वास्थ्य लाभ हुआ

अचानक दांए पैर के घुटने में दर्द शुरू हुआ। और दो-तीन दिन के अन्दर ही खाट पकड़ ली।

-एक एक कर कई डॉक्टरों से जाँच करवाई।

-मेडिसिन से कोई फायदा नहीं हुआ।

-फिर किसी की राय पर आयुर्वेदिक दवाईयाँ भी ली लेकिन दर्द बढ़ता ही गया और कोई फायदा नहीं हुआ।

-फिर अजमेर जाकर एक डॉक्टर को दिखाया तो कहा कि ऑपरेशन होगा। सफल भी हो सकताहै और नहीं तो पैर काटना पड़ेगा।

-दिल्ली के एम्स हॉस्पीटल से घुटने के ऑपरेशन का विचार बनाया और खर्चे के रूप में 5-6 लाख का लगभग खर्चा बताया।

-इन्हीं दिनों में मेरे मिलने वाले के कहने पर जोधपुर स्थित गुरुदेव श्री सियाग के आश्रम जाकर मंत्र दीक्षा ली। सघन मंत्र जप और नियमित ध्यान से आज मैं पूर्णतः ठीक हूँ।

-सद्गुरुदेव भगवान् की ऐसी करूण कृपा बरसी कि मेरा जीवन धन्य हो गया। सिर्फ बीमारी ही ठीक नहीं हुई बल्कि जन्म जन्म के कलंक काट दिये। -ठीक होने के बाद, मैं अपने गृहस्थी जीवन के निर्वहन के साथ नियमित आराधना करता हूँ और फिर किसी भी डॉक्टर के पास नहीं गया।

फिर मैंने मेरी बच्ची के मामा ससुर **डॉ. शिवलाल यादव जो दिल्ली एम्स हॉस्पीटल में हड्डी के विशेषज्ञ डॉक्टर हैं,** उनको रिपोर्ट दिखाई तो उन्होंने कहा कि इसका तो ऑपरेशन ही करना पड़ेगा, खर्चा तो काफी आएगा परन्तु ऑपरेशन करवा देंगे, आप यहाँ आ जाओ। मैंने पूछा कि ''खर्चा कितना आएगा?'' तो उन्होंने कहा ''लगभग 5-6 लाख रुपये लग जाएंगे।'' उस हिसाब से मैंने दिल्ली जाने के लिए ट्रेन का टिकट रिजर्वेशन करा लिया था।

यह बात मैंने गंगाराम जी को बताई जो मेरी जान पहचान में है तथा जोधपुर में ही नौकरी करते हैं तो उन्होंने कहा''ठीक है दिल्ली तो बाद में जाना ही है, ***उससे पहले मेरी एक राय है कि कल गुरुवार के दिन अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर में सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का विशाल कार्यक्रम है, वहाँ चलते हैं,*** हो सकता है **गुरुदेव की कृपा से आपका पैर ठीक हो जाए!''** तो मैंने कहा''गंगाराम जी जब डॉक्टरों ने ऑपरेशन का बोला है तो गुरु जी के पास में ऐसा क्या है? जो मेरा पैर ठीक कर देंगे।''मैंने उनकी बात को टालना चाहा परन्तु वे माने नहीं। उन्होंने कहा ''आप एक बार मेरे कहने से टिकट रद्द (Cancel) करा दो। मैंने कहा'' मैं चल नहीं सकता, मुझे वहाँ ले जाएगा कौन?''तो उन्होंने कहा ''मैं आपको रिक्शे मैं बिठा कर ले जाऊँगा, इसकी आप चिंता मत करो।'' दूसरे दिन श्री गंगाराम जी मुझे कार्यक्रम

www.the-comforter.org

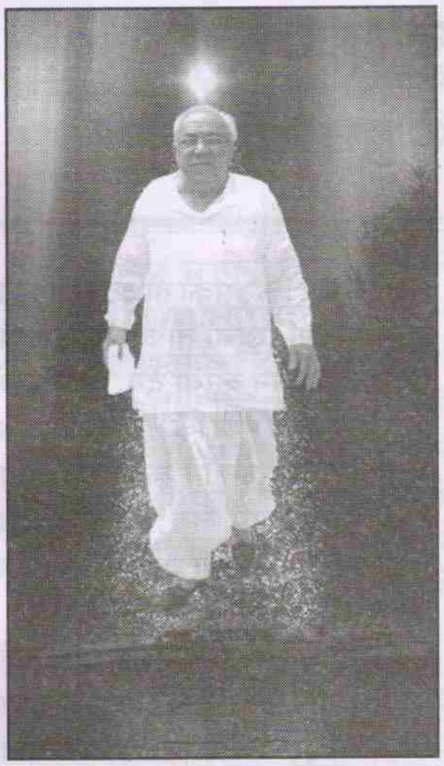

गुरुदेव आकर आसान पर बैठे। सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी, मंत्र सुनाया और कहा कि **''इस मंत्र का सघन जप करो और मेरी तस्वीर का ध्यान करो, चाहे कैसी भी बीमारी हो? ठीक हो जाएगी।''**

इसके बाद पन्द्रह मिनट का ध्यान करने का बोला तो सबने आँखें बंद कर ध्यान शुरू किया। ज्योंही ध्यान शुरू किया, कई साधकों को यौगिक क्रियाएँ होने लगी। कोई जोर-जोर से हंस रहा है, तो कोई रो रहा है, किसी को प्रणायाम हो रहा है तो किसी को सिरषासन लग गया, सबको अलग-अलग तरह की यौगिक क्रियाएँ स्वतः ही होने लगी। मेरे लिए ये सब कौतुहल ही था। ऐसा कभी नीरवता व शांति का एहसास हुआ था उसको मैं भय के कारण अचानक भूल गया। तो उन्होंने हमारे को रोक लिया और बोले कि आप थोड़ा धीरज रखो, कोई गड़बड़ नहीं होगा। थोड़ी देर बाद जैसे ही गुरुदेव ने बोला कि पन्द्रह मिनट का समय पूरा हो गया है, आँखें खोल दो तो सब शांत हो गये और पहले जैसी स्थिति में वापस आ गए। उसके बाद गुरुदेव ने बोला कि **''जहाँ बैठे हो नमस्कार करो और पधारो।''** उसके बाद गुरुदेव वापस अपने शयनकक्ष में चले गए।

इसके बाद सबने गुरुदेव के सिद्धासन को छूकर नमन् किया और जाने लगे। फिर हमने गुरुदेव की तस्वीर

में ले गए। वहाँ जा कर देखा तो पूरा मैदान जनता से खचाखच भरा हुआ था। मैंने गंगाराम जी से कहा कि यहाँ इतनी भीड़ में अपना नम्बर कब लगेगा? चलो वापस चलते हैं, **क्योंकि मैं सोच रहा था कि गुरुजी कान में कोई मंत्र फूकेंगे।** उन्होंने कहा कि ''नहीं, यहाँ ज्यादा समय नहीं लगेगा, **गुरुदेव सबको एक साथ माइक से मंत्र सुनाएंगे।** आप यहाँ तक आए हैं तो थोड़ा **विश्वास और धैर्य से** बैठ जाइए। तो मैं, मेरा बेटा व गंगाराम जी हम तीनों वहाँ बैठ गये।

थोड़ी देर बाद माइक से घोषणा हुई कि गुरुदेव पधार रहे हैं। मैंने उधर देखा तो बिल्डींग की दूसरी मंजिल से गुरेदव आते हुए दिखे। ज्योंही मैंने गुरुदेव को देखा तो मुझे ऐसा लगा कि **''साक्षात् भगवान्, आसमान से धरती पर उतर रहे हैं और मेरे अंदर असीम शांति महसूस हुई।''** मेरे अंदर जो वापस जाने की इच्छा थी, वह एकदम से खत्म हो गई। प्रथम दर्शन में ही मन में एक नीरवता व शांति का एहसास हुआ।

देखा नहीं था। इतने में मेरे पास बैठे मेरे बच्चे के ध्यान लग गया और वह गुलाटियाँ खाने लग गया तो मैं देखने लग गया और मुझे डर लगने लगा कि मेरे बेटे को क्या हो गया? मैंने गंगारामजी से कहा कि 'आप हमारे को कहाँ भूत खाने में ले आये? एक तो समस्या पहले थी ही, एक मेरे बेटे के गड़बड़ और हो गई, यहाँ से जल्दी निकलो।' उस यौगिक क्रिया को देखकर, पहले जो ली और घर आ गये। इसके बाद बीमारी को लेकर जो मन में मुझे चिंता थी व खत्म हो गई। मुझे विश्वास हो गया कि अब मेरी बीमारी ठीक हो सकती है। सात-आठ दिन तक मैं मंत्र जप व ध्यान करता रहा, परन्तु मेरा ध्यान लगा नहीं।

उन्हीं दिनों में मुझे रेलवे ऑफिस से कॉल आया कि 60 दिन की ट्रेनिंग के लिए आपको उदयपुर जाना होगा, क्योंकि मैं पिछले छह महिने से घर पर

ही पड़ा था, ड्यूटी पर गया नहीं था। दीक्षा लेने के नवें दिन मुझे उदयपुर जाना था। उसी दिन शाम को 9:00 बजे के आस-पास मैं नहा-धोकर तैयार हो गया

क्योंकि मेरे 11:00 बजे की बस थी। मैंने मेरे बेटे से कहा कि मुझे बस में बैठा देना, मैं चला जाऊँगा। रवाना होने से पहले मैंने सोचा कि अभी समय तो पड़ा ही है, थोड़ा ध्यान कर लूँ। गुरुदेव की तस्वीर के सामने पैर सीधा रख कर बैठा और ध्यान करने लगा, जैसे ही ध्यान शुरू किया, मेरा ध्यान लग गया और मैं अचानक सीधा खड़ा हो गया। **''मेरे पैर में जोरदार झटका लगा और पैर सीधा हो गया।''** मेरे पैर में से घुटने से लेकर एड़ी से होता हुआ एक आग का गोला-सा निकल गया। मेरे पैर में जो असहनीय दर्द था, वह सारा गायब हो गया।

मैं जोर-जोर से कूदने-नाचने लग गया और मैं क्या देखता हूँ कि **'भगवान् श्री कृष्ण मेरे सामने, ऊपर की तरफ बंशी बजाते हुए नाच रहे हैं।'** मैंने उनसे कहा भगवान् आओ-आओ-मेरे पास आओ, आपको मेरे पास आना ही पड़ेगा, वह सामने बंशी बजाते हुए नाच रहे हैं किन्तु पास नहीं आवें। बाद में मेरे बार-बार पुकारने पर वह मेरे पास आए

और मेरे सीने में घुस गए। इसके बाद मैंने भगवान् शंकर की तस्वीर, जो मेरे घर में लगी थी, की तरफ हाथ से इशारा करते हुए पुकारा-आओ-आओ शंकर मेरे पास आओ, आपको मेरे पास आना ही पड़ेगा, तब भगवान् शंकर तस्वीर में से निकल कर मेरे सिर में घुस गये। फिर गुरुदेव व दादागुरुदेव (बाबा गंगाईनाथ जी योगी) आये और दोनों ही मेरे दाएं और बाएं कंधों पर बैठ गये। मेरी जीभ स्वतः ही उलट कर तालु में धंस गई और खे्चरी मुद्रा लग गई, ऊपर से रस (अमृत) टपकने लगा। उस रस का स्वाद इतना मधुर था कि ऐसा स्वाद बाहर किसी भी चीज में नहीं है। मैं उस रस को चूसने लगा जिससे मेरे मुँह से जोर-जोर से सी.....सी....सी.... की आवाज निकले लगी।

मेरा मंत्र जप रुक गया और वह एक धुन में बदल गया। मेरे बच्चे पास में चिल्लाने लगे कि पापा आपका तो कल्याण हो गया, आपका पैर गुरुदेव ने ठीक कर दिया।

उसके बाद मेरा पैर बिल्कुल ठीक हो गया, आज तक कभी भी दर्द नहीं हुआ, मेरे को हजारों रुपये की दवाईयाँ फेंकनी पड़ी क्योंकि दवाईयाँ मेरे कोई काम की नहीं थी। मुझे समझ में नहीं आता ये डॉक्टर लोग क्या करते है ? जो बीमारी लाखों रूपये की दवाईयों से ठीक नहीं होती है, वह गुरुदेव ने एक मंत्र के माध्यम से पूरी तरह से खत्म कर दी। अब मैं हर समय गुरुदेव द्वारा बताए गये संजीवनी मंत्र का जप करता रहता हूँ और सुबह-शाम पन्द्रह मिनट गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान करता हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने उसी समय गुरुदेव से मंत्र दीक्षा ले ली थी। मेरा पूरा परिवार आनन्द मय जीवन जी रहा है। मैं अब भी ट्रेन चलाता हूँ और लोगों को गुरुदेव के दर्शन की जानाकारी देता रहता हूँ। मेरे सारे कार्य गुरुदेव की कृपा से सफल होते हैं।

-सद्गुरुदेव भगवान् की ऐसी करूण कृपा हुई कि मेरा नारकीय जीवन सुखद और स्वस्थ्य, आनंदमय जीवन बन गया।

www.the-comforter.org

-यदि मैं दिल्ली में ऑपरेशन करवाता और सफल नहीं होता तो पैर कट सकता था। एक या दोनों ही कट सकते थे लेकिन गुरुदेव की असीम कृपा से, मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया और अंग भंग भी नहीं हुआ।

-डॉक्टरों ने बोला था कि ऑपरेशन में 5-6 लाख का खर्चा आएगा, वह मेरा पूरा का पूरा बच गया। छवनी भी नहीं लगी।

-अद्भुत सिद्धयोग से पूर्णतः स्वस्थ होने के बाद में, मैंने सारी दवाईयाँ और मेडिकल रिपोर्ट्स फाड़कर फेंक दी।

"अब ध्यान जो है उसके लिए एक ही शर्त है कि सुबह नहा धोकर, खाली पेट, सूर्योदय से पहले-पहले हो तो बहुत अच्छा, नहाने की सुविधा नहीं है तो बिना नहाए भी कर सकते हो। किसी पर बैठ जाइए, जमीन पर बैठ जाइए, आसन बिछा लीजिए, किधर ही मुँह कर लीजिए, कोई फर्क नहीं पड़ता। भगवान् कोई एक ही दिशा में नहीं बैठा है वो तो सर्वत्र है, सर्वज्ञ है और शेर की खाल बिछाओ कि कुशासन बिछाओ कि मृग की खाल बिछाओ ! उसमें बैठा है भगवान् घुसा हुआ जो आपको ऊपर बैठते ही मिल जाएगा।

ये तो सब कर्म काण्डियों के टोटके हैं; मेरे को इसमें कोई सच्चाई नजर नहीं आती। कहीं बैठ जाइए और नाम जप चालू है, आँख बंद कर लो और गुरु को यहाँ (आज्ञाचक्र) पर देखो। अब क्या होगा, उससे ? **जो मैं आपको नाम बताऊँगा, वो चेतन मंत्र है, एनलाईटेंड है, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की हुई है। उसमें असंख्य गुरुओं की कमाई है। मैं तो लुटाने निकला हूँ, दोनो हाथों से !"**

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सद्गुरुदेव सियाग द्वारा बताई गई आराधना से मनुष्य मात्र में जो परिवर्तन आ रहा है वो भारतीय योग दर्शन के सिद्धांत के अनुसार आ रहा है। यह कोई करिश्मा, चमत्कार या जादू नहीं है, बल्कि अध्यात्म विज्ञान का परिणाम है। सृष्टि में क्रमिक विकास के सिद्धांत के अनुसार यह मनुष्य का उत्तरोतर विकास है।

"मानव से अतिमानव की ओर", का सोपान है। विश्व विज्ञान की असंख्य समास्याओं का समाधान अध्यात्म विज्ञान में निहित है। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर, मंत्र जप के साथ 15 मिनट ध्यान करके देखें !

अब मैं समझ रहा हूँ कि यदि मेरे पास मेडिकल रिपोर्ट्स होती तो दुनिया के लिए एक बहुत बड़ा सबूत होता लेकिन मैं जीता-जागता सबूत दुनिया के सामने खड़ा हूँ और गुरुदेव की असीम कृपा से मंत्र जप और ध्यान से पूर्णतः स्वस्थ हुआ हूँ।

एक और कैंसर रोगी की घटना है। एक क्रिश्चियन औरत उसका नाम रुख्मणीदेवी है। रेलवे में हैड क्लर्क के पद पर थी। उनको गले का कैंसर हो गया था। उनको तीन बार मुम्बई के बॉम्बे हॉस्पीटल में दिखाया और दवाईयाँ ली परन्तु कोई राहत नहीं मिली। डॉक्टरों ने कहा कि अब यह छह महिने से ज्यादा नहीं जी सकती है। घर ले जाकर सेवा करो। किसी गार्ड ने मुझे उनके बारे में बताया तो मैं उनको गुरुदेव के आश्रम में ले आया। उन्होंने गुरुदेव से मंत्र दीक्षा लेकर मंत्र जप व ध्यान किया। उसकी स्थिति ऐसी थी कि देख नहीं सकते थे। गला सूज कर बहुत बड़ा हो गया था। वह सघन मंत्र जप व नियमित ध्यान से ठीक हो गई और पाँच-छह साल नौकरी करने के बाद, अब सेवानिवृत्त हुई है।

अब उनका गुरुदेव के प्रति क्या भाव है? वो ही जाने लेकिन कभी-कभी मंत्र जप और ध्यान के बारे में पूछता हूँ तो उनका गार्ड पति कहता है कि वह ध्यान कर रही है। आज वह पूर्णरूप से स्वस्थ है। **"सिद्धयोग ने कैंसर को मार दिया। कैंसर से वो नहीं मरी।"** ऐसा अद्भुत ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए है, जो श्रद्धा से झुक गया उसका कल्याण निश्चित है। **"यह एक मानवीय धर्म है"** जो सद्गुरुदेव अपने प्रवचन में हमेंशा कहते थे वो पूर्णतः प्रत्यक्षीकरण के साथ सत्य और परम सत्य है।

इसलिए मैं **स्पिरिचुअल सांइस** पत्रिका के माध्यम से मानव मात्र को यही राय देना चाहता हूँ कि आप **सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग** द्वारा बताए गए **संजीवनी मंत्र** का जप व उनकी तस्वीर का ध्यान करो, आपका जीवन धन्य हो जाएगा। मैंने कभी गुरु धारण करने की नहीं सोची थी, परन्तु मुझे तो **साक्षात् परमात्मा, सद्गुरुदेव के रूप में मिल गए।** ऐसे परम पूज्य सद्गुरुदेव भगवान् को मेरा अनन्त कोटि प्रणाम। जय गुरुदेव।

-रामभरोसे यादव (56 वर्ष)
तहसील- राजगढ़
जिला-अलवर (राज.)

बवासीर का ठीक होना

सिद्धयोग-पर्चे (सिद्धयोग-पत्रक, Leaflet, Pamplet) ने जीवन बदला

दिनांक 19.08.2018 को दिल्ली से संस्था कार्यालय में एक कॉल आया। उन्होंने अपना नाम श्री लालसिंह यादव बताया। उन्होंने कहा कि मुझे कहीं से सद्‌गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग का एक पेम्पलेट मिला है, इनके बारे में पूरी जानकारी लेना चाहता हूँ। उनको सद्‌गुरुदेव के दर्शन की जानकारी दी और सद्‌गुरुदेव का संजीवनी मंत्र सुनने के लिये -07533006009 नम्बर दिये।

उसके बाद उनको पूछा कि आपका गुरुदेव के सिद्धयोग दर्शन की जानकारी लेने के पीछे उद्देश्य क्या है ? कोई बीमारी है या आध्यात्मिक उत्थान के लिये तो उन्होंने बताया कि ''मेरे तो बीमारी (हंसते हुए) दो-तीन दिन ध्यान करने से ही ठीक हो गई थी।''

जब उनको पूछा कि आपको क्या बीमारी थी, और क्या आपने गुरुदेव से मंत्र दीक्षा ले रखी है ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि मेरे बवासीर रोग था और मैंने मंत्र अभी प्राप्त नहीं किया है, मैंने तो ''गुरुदेव-गुरुदेव'' शब्द के जप के साथ गुरुदेव के चित्र का ध्यान किया, जिससे सिर्फ ''तीन बार'' ऐसा करने पर मेरी बीमारी समूल नष्ट हो गई, इसलिये मुझे गुरुदेव व सिद्धयोग दर्शन के बारे में जानने की जिज्ञासा उत्पन हुई और मैंने कॉल किया। मैं गुरुदेव के आश्रम में भी आना चाहता हूँ।

जोधपुर आश्रम ऑफिस कॉल पर
श्री मिश्राराम प्रजापत
की श्री लालसिंह यादव
निवासी दिल्ली से
हुई बातचीत के आधार पर।

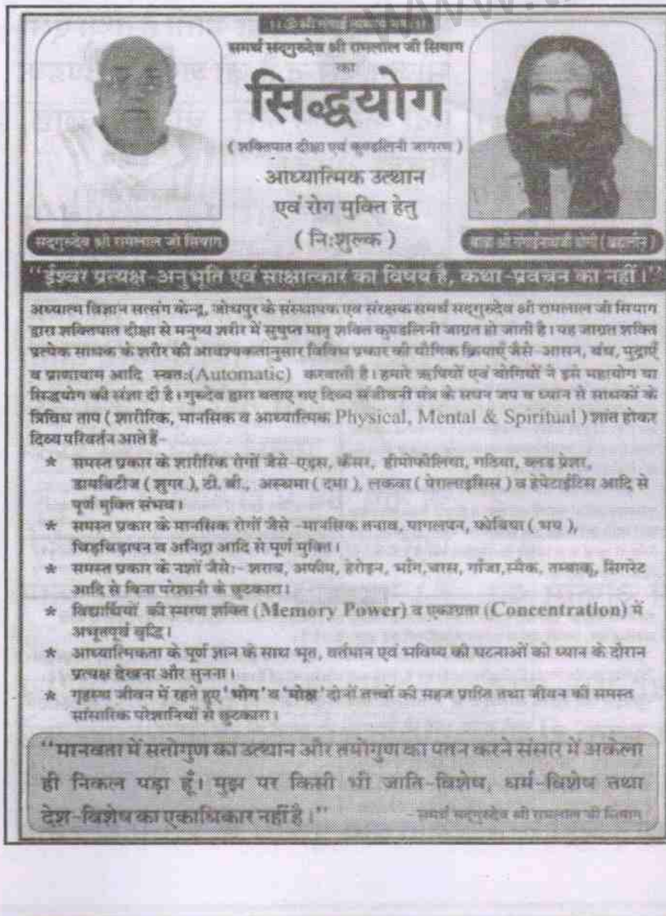

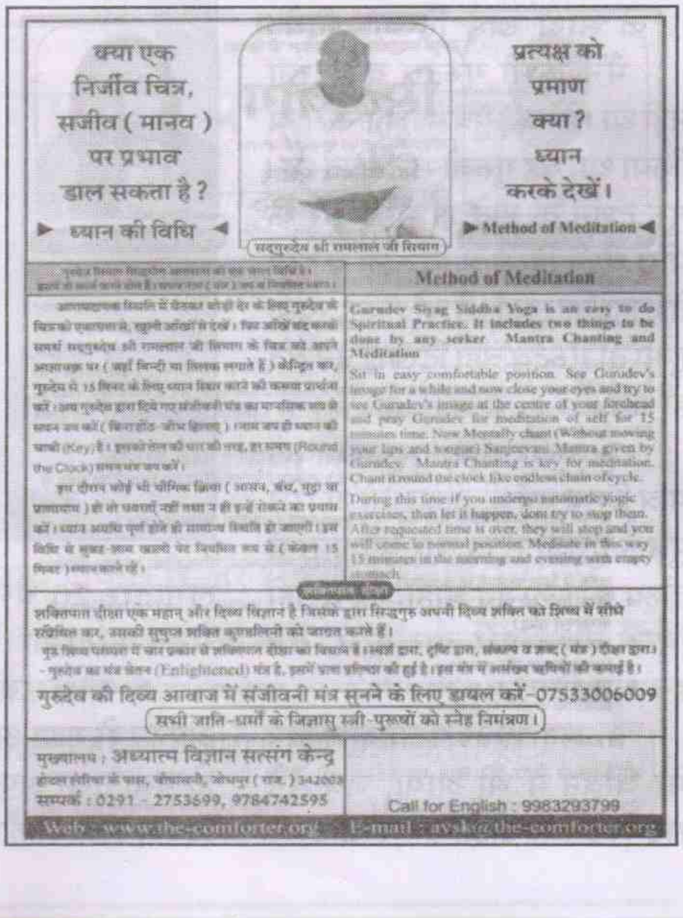

www.the-comforter.org

"वृत्तियों का रूपान्तरण"

नील पुरुष के दर्शन हुए-एक दिन प्रातः ध्यान करके उठा, फिर ध्यान लग गया और मुझे तेज **नीला प्रकाश पुंज** बिखेरते हुए- एक पुरुष के दर्शन हुए। यह कैसा था? मैं वर्णन नहीं कर सकता। इतना कह सकता हूँ कि ऐसा सुन्दर पुरुष मैंने संसार में कभी नहीं देखा तथा उसके दर्शन से मेरा मन आनन्द-विभोर हो उठा।

1. दीक्षा ग्रहण करने के 8 दिन पूर्व, रात में 4:00 बजे मैं अपने घर पर कोटड़ी में नींद में सो रहा था, तब अचानक मुझे **सद्गुरुदेव सफेद वस्त्र पहने हुए एक अन्य सफेद वस्त्रधारी के साथ खड़े दिखाई दिये।** मैंने कभी गुरुदेव को देखा नहीं था। मेरे बड़े पुत्र ने जिक्र अवश्य किया था, वह गुरुजी से दीक्षित था। गुरु दर्शन के होते ही मेरे शरीर के पीछे वाले हिस्से में बिजली का सा तेज झटका लगा। मैं चौंककर, खड़ा हुआ तो गुरुदेव वहाँ दिखाई देने बंद हो गये।

2. उन दिनों में, गुरुदेव केवल पात्र शिष्य को ही दीक्षा देते थे। मेरे पुत्र ने गुरुजी से दो बार बीकानेर में दीक्षा की इजाजत चाही, परन्तु नहीं मिली तो तीसरी बार पूछा, तब इजाज़त मिली।

3. सन् 1991 में वह शुभ दिन मेरे जीवन में भी आया, जब मैंने सद्गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण की।

4. दीक्षा ग्रहण करने के बाद लगातार सुबह-शाम गुरुदेव की तस्वीर का ध्यान और मंत्र का जप निरन्तर करता रहा।

5. मेरी आयु 67 वर्ष है। मैं

लगातार 20 वर्ष से अफीम का सेवन करता था।

6. दीक्षा के दो माह बाद अफीम से नशा आना स्वतः ही बंद हो गया तथा अफीम लेना बंद कर दिया। अब अफीम छोड़े मुझे तीन वर्ष हो गये हैं।

7. अफीम छोड़ने के बाद एक-आध बार जब मैंने फिर खाया तो शरीर में तकलीफ हुई, शरीर भारी, माथे में गैस, शरीर में तनाव, थकान महसूस होने लगी, अब मैं नशे से पूर्ण मुक्त हूँ।

8. **खान-पान में बदलाव**- दीक्षा प्राप्त करने से पहले मुझे स्वादिष्ट मसालेदार भोजन पसन्द था। अब ऐसा भोजन खाने से तुरन्त शरीर में गड़बड़ हो जाती है तथा ऐसा भोजन पसन्द है जो शरीर में ठण्डक पैदा करता हैं जैसे- घी, दूध, छाछ, राबड़ी आदि।

9. **व्यवहार एवं स्वभाव में परिवर्तन**- पहले मैं सांसारिक चिन्तन में मस्त रहता था, दूसरों को परास्त करने में पड़ा आनन्द आता था। अब ऐसा नहीं रहा। अब मुझे दूसरों की भलाई करने तथा ईश्वर के नाम जप में ही आनन्द आता है। दिन-रात प्रभु नाम की रट लगी रहती है। गृहस्थ जीवन के सभी काम करता हूँ।

10. मेरे परिवार के सभी सदस्य दीक्षित हैं। ज्यादातर घर से बाहर रहते हैं। जब वे घर आते हैं तो उनसे बातचीत गुरुदेव के बारे में ही होती

www.the-comforter.org

रहती है तो बड़ा आनन्द आता है तथा गुरुदेव से दीक्षित शिष्य जो चेतन होते हैं, उनसे जब बात करता हूँ, वे मेरे परिवार जैसे लगते हैं।

मेरे सभी पुत्र श्री सद्‌गुरुदेव जी के इस मिशन (संस्था) में पूर्ण रूप से समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं। पहले मेरे पुत्र धन कमाकर लाते थे तब जो खुशी होती थी, उससे कितने ही गुना अधिक खुशी अब उनके इस मिशन में कार्य करने से मुझे होती हैं। **क्योंकि इस मिशन का कार्य करना ही सबसे अमूल्य धन हैं, ऐसा मेरा मानना हैं।**

10.एक दिन प्रातः ध्यान करके उठा, फिर ध्यान लग गया और मुझे **तेज नीला प्रकाश पुंज** बिखेरते हुए- एक पुरुष के दर्शन हुए। यह कैसा था ? मैं वर्णन नहीं कर सकता। इतना कह सकता हूँ कि ऐसा सुन्दर पुरुष मैंने संसार में कभी नहीं देखा तथा उसके दर्शन से मेरा मन आनन्द से विभोर हो उठा- थोड़ी देर बाद यह दृश्य गायब हो गया। मैं इसे और देखने को व्याकुल हो उठा, मगर वह नहीं दिखाई दिया। ध्यान में और भी विचित्र-विचित्र दृश्य, वृक्ष, हरियाली, प्रकाश, अथाह जल आदि दिखाई देता हैं।

11.1992 में जामसर भण्डारे के अवसर पर गया था। वहाँ गुरुदेव से प्रार्थना की थी, कि जो मुझे प्राप्त है उससे संतुष्ट हूँ, मगर ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन की इच्छा है।

इस प्रार्थना के चार दिन बाद मेरे ललाट जहाँ तिलक-बिंदी लगाते हैं,वहाँ से एक शक्ति रेंगती हुई, कभी बिजली सी चमकती हुई सरसराहट की अनुभूति के साथा मस्तिष्क पर चढ़ गयी तथा शिखा वाले स्थान से ऊपर निरन्तर चलती रहती है। यह शक्ति तब से लेकर अब तक निरन्तर चलती रहती है, मैं किसी दूसरे व्यक्ति से बातचीत करता हूँ, उस समय भी यह क्रिया चलती रहती है। जब गुरुदेव के पास जाता हूँ तो यह अनुभूति बड़ी तेज हो जाती है।

12.मेरा चित शांत, क्रोध कम हो गया तथा मन में बड़ी तसल्ली रहती है। मेरी इच्छा यह है कि जल्दी से जल्दी ईश्वर के दर्शन करूँ तथा दूसरे सारे लोग भी इस आराधना को करें।

मेरा गुरुदेव में विश्वास इतना है कि बस गुरुदेव....... बाकी कुछ नज़र नहीं आता हैं और इतना विश्वास रखता हूँ कि गुरुदेव, ईश्वर के दर्शन निश्चित रूप से करवा देंगे।

-बालुसिंह राजपुरोहित
धीरदेसर पुरोहितान
श्री डूंगरगढ़, चुरू, राज.
संदर्भ-'राजकुल संदेश'
15 सितम्बर 1994

www.the-comforter.org

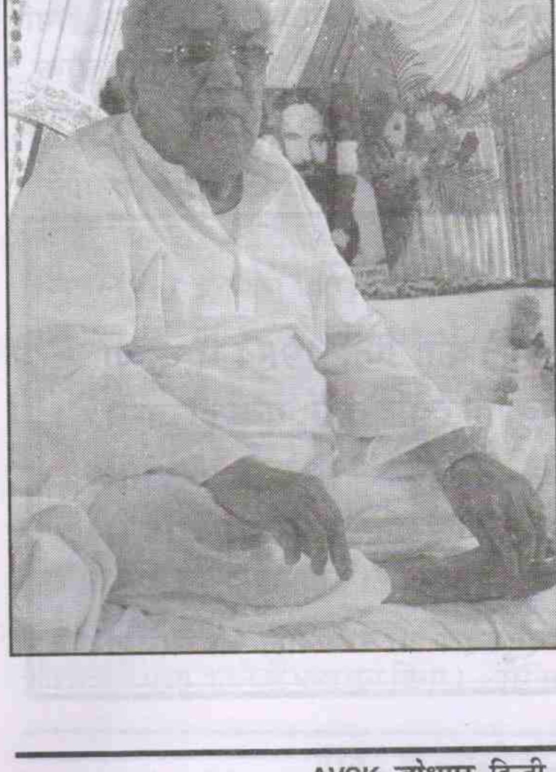

''नाम-जप का महत्त्व''

जोधपुर आश्रम में, सद्‌गुरुदेव के दर्शन के लिए जब साधक आते थे और नाम जप में आ रही कठिनाईयों के बारे में पूछते थे तो गुरुदेव बड़ा ही सटीक जवाब देते थे-

सद्‌गुरुदेव- ''नाम तो जपना ही पड़ेगा। 'मंजिल' तक पहुँचने के लिए 'चलना' तो आपको ही पड़ेगा। मतलब उसका ''नाम'' तो जपना ही पड़ेगा।''

-''नाम जप करो-हर समय(Round the Clock), तेल की धार की तरह, साइकिल की चैन की तरह।''

-''कोशिश करते रहो, कोशिश करने से ''सब कुछ'' संभव।''

नारकीय जीवन से सिद्धयोग ने उबारा

उदर-विकार, नेत्र रोग, बवासीर और चर्म रोग में अद्भुत फायदा

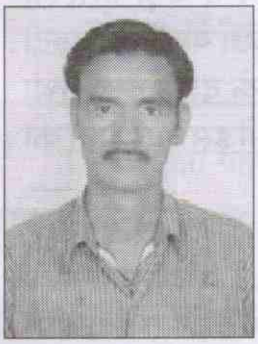

परम् आराध्य श्री सद्गुरुदेव भगवान् सच्चिदानन्द के पावन चरणों में शत्-शत् नमन, वंदन करते हुए आज मेरा मन हर्षित हो रहा है कि मुझे सद्गुरुदेव जी की अगाध दया और कृपा के सम्बन्ध में कुछ लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आज से एक वर्ष पूर्व जब सद्गुरुदेव की कृपा दृष्टि मुझ पर एवं मेरे परिवार पर पड़ी।

मैं उन दिनों बहुत बीमार हुआ करता था। मेरे शरीर में बवासीर रोग के अलावा उदर विकार, नेत्र रोग, भंयकर चर्म रोग और हृदय रोग आदि से पीड़ित था। उस अवस्था में बिस्तर पर पड़े-पड़े नारकीय जीवन जी रहा था और प्रतिक्षण असाध्य बीमारियों व गरीबी की तरफ बढ़ता जा रहा था। बार-बार ऑपरेशन व उपचार के बाद भी मेरी बीमारी बढ़ती गई और बवासीर का रोग भगन्दर रोग में तब्दील हो गया, जिसका पूर्णतः उपचार असम्भव हो गया। डॉक्टरों ने एक बार पुनः ऑपरेशन की सलाह दी। यह भी कहा कि इस बीमारी का अब पूर्णतः उपचार असम्भव है। उस समय बिस्तर पर पड़े-पड़े भंयकर दर्द होने के कारण, मैं मृत्यु की कामना करने लगा।

उन दिनों मेरे एक परम् मित्र मेरे घर पर मुझे देखने के लिए आये और उन्होंने मुझे और मेरी पत्नी को गुरुदेव के बारे में बताया और भौलाराम निषाद (गुरुदेव का शिष्य) के घर ले गये। भौलाराम ने भी गुरुदेव के बारे में बताया। उसके पश्चात् भौलाराम के भाई ने सी.डी. के माध्यम से दीक्षा दिलवाई। परम् सद्गुरुदेव सियाग के प्रवचन और मंत्र सुनकर मैंने ध्यान लगाया। उसके बाद मैं नियमित रूप से सुबह शाम सद्गुरुदेव का ध्यान करता रहा। अब मैं इस उपकार को जीवन भर नहीं भूलूँगा। तत्पश्चात् गुरुदेव से करुण प्रार्थना करने और गुरुदेव के द्वारा बताये मंत्र का मानसिक जाप करने से मेरी हालत में सुधार होने लगा। मैं चर्म रोग से लगभग 70-80 प्रतिशत ठीक हो गया। मुझे सकारात्मक अनुभव हुए। परम कृपालु प्राणनाथ ज्योर्तिमय उद्धारचित गुरुदेव परमात्मा के परम् प्रकाश की नित्य आलौकिक अनुभूति चैतन्य चक्रों के पावन पुँज की दृश्यावली का वर्णन शब्दों के परे हैं। मैं तो बस इतना ही कह सकता हूँ कि -

जो बात दवा से होती नहीं,
वो बात दूआ से होती है।
जब काबिल मुर्शिद मिलते हैं
तो बात खुदा से होती है।।

सोहन शर्मा पुत्र
श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा
बढई पारा ललिता चौक,
रायपुर, छतीसगढ़

सद्गुरुदेव सियाग की तस्वीर से ध्यान

"मुझे दोनों सिद्धियाँ हो गई, पहले गायत्री (निर्गुण) की, फिर 1984 में कृष्ण की। श्री अरविन्द ने कहा है कि अगर दोनों सिद्धियाँ, एक ही व्यक्ति में, एक ही जन्म में हो जाए तो वो अमर हो जाएगा मतलब **"पार्थिव अमरत्व"** (Terrestrial Immortality) इस दुनिया में रहते हुए अमर हो जाएगा। इसलिए मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अफीम से मुक्ति

मैं रूपाराम पुत्र श्री बाबूराम प्रजापत, गाँव बालेसर सताँ, जिला-जोधपुर का रहने वाला हूँ। मैं पिछले 7-8 वर्षों से निरन्तर अफीम का सेवन करता था। कभी-कभी अफीम लेने में देरी हो जाती तो शरीर जवाब दे जाता और मैं अपने आपे से बाहर हो जाता।

हमारे गाँव बालेसर में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की ओर से एक दिवसीय ध्यान योग शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ''शक्ति पात दीक्षा'' दी गई। मुझे किसी ग्रामवासी द्वारा बताया कि एक समर्थ सद्‌गुरु पधार रहे हैं, उनके सानिध्य में ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति एवं साक्षात्कार होता है एवं सभी प्रकार के नशों, रोगों एवं मानसिक बीमारियों से स्वतः एवं पूर्णतया मुक्ति बिना दवाई के मिल जाती है। मैंने भी जिज्ञासावश उस शिविर में भाग लिया। पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये तरीके से मैंने आराधना शुरू की।

आराधना शुरु करने के चार-पाँच दिन में ही मुझे अफीम की तलब महसूस नहीं हुई। मेरा शरीर पूर्णतया स्वस्थ हो गया है। मेरे करीब 12 साल से छाती में एक तेज प्रकार की कष्टप्रद पीड़ा होती थी। इसके लिये मैं दर्द निवारक दवा हरदम पास में रखता था कि कभी भी छाती में पीड़ा उठ सकती है। इसको शान्त करने के लिए, मैं दवाई ले लेता था। पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में आने के पश्चात उस बीमारी से भी मुझे पूर्णतया मुक्ति मिल चुकी है। दीक्षा के पाँच सात दिन बाद से आज तक मैंने (करीब 5 माह बाद) अफीम का सेवन नहीं किया अफीम छोड़ने से मुझे किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आई। यदि कभी थोड़ी बहुत आती, वह भी गुरुदेव के स्मरण से ही समाप्त हो जाती। आज मैं अपने आपको स्वस्थ पाता हूँ। यह सब श्री गुरुदेव के सानिध्य एवं उनके द्वारा बताये गये ईश्वरीय मार्ग की देन हैं।

रूपाराम प्रजापत
बालेसर, जोधपुर

संदर्भ-'राजकुल संदेश'
15सितम्बर1994

www.the-comforter.org

कहानी...

''गुरु मंत्र''

एक बार सम्राट अकबर सुबह-सुबह बीरबल के महल में पहुँच गये। पता लगा कि बीरबल साधना कर रहे हैं, अकबर को काफी देर तक बीरबल का इंतजार करना पड़ा। बीरबल के आने पर अकबर ने शिकायत की कि वे इतनी देर तक क्या कर रहे थे ? बीरबल ने सहज ही जवाब दिया कि वे मंत्र जाप में डूबे हुए थे।

अकबर के दिमाग में आया कि उन्हें भी बीरबल से मंत्र सीखना चाहिए ताकि वे भी उसका जाप कर सकें। पर बीरबल ने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने अकबर को बताया कि मंत्र सिर्फ 'गुरु' ही दे सकता है, अकबर को लगा बीरबल उन्हें टरका रहा है।

बात बढ़ गयी, तब अचानक बीरबल ने अकबर के सिपाहियों को आदेश दिया कि वे अकबर को गिरफ्तार कर लें। पर अकबर के सिपाही सम्राट को कैसे गिरफ्तार करते ? मगर बीरबल के ऐसे आदेश से अकबर क्रोधित हो गया, गुस्से में उन्होंने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे बीरबल को गिरफ्तार कर लें। सैनिकों ने यही किया।

पकड़े जाने के बाद बीरबल हंसते हुए अकबर से बोले, ''देखिए, जिस तरह इन सैनिकों ने आपके ही आदेश का पालन किया, उसी तरह मंत्र भी कोई सिद्धगुरु ही दे सकता है। मेरे मंत्र भी आपको दिये गये सैनिकों के आदेश की तरह बेअसर रहेंगे।'' अकबर, बीरबल की बात समझ गये।

आज हजारों गुरु, मंत्र देते हैं लेकिन दुनिया में बदलाव नहीं आ रहा हैं क्योंकि उनके पास 'गुरु पद' नहीं है। जिनके पास गुरुपद है, उनकी वाणी में ही शक्ति होती है। ❖❖❖

"हार्पिस जोस्टर ओफ्थेल्मिक्स" का ठीक होना

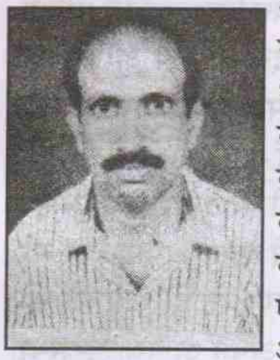

मैं दिसम्बर 90 से 'हर्पिस जोस्टर ओफ्थेल्मिक्स बीमारी से ग्रस्त था। मेरे सिर पर काफी भाग में बीमारी के कारण फोड़े वगैरह भी हो गए एवं एक दाहिनी आँख भी इसकी चपेट में थी। इसकी वजह से सिर के अन्दरूणी भाग में भी कभी-कभी बहुत असहनीय खुजली व जलन चलती थी जो कि काफी पीड़ा दायक थी। मैंने डॉक्टरों से इलाज भी करवाया जिसके कारण फोड़े वगैरह तो ठीक हो गये परन्तु सिर के आन्तरिक भाग में खुजली व तीव्र जलन बरकरार रही।

जब कभी इस तरह होती थी तो ऐसा लगता था कि सिर के किसी भाग में काफी चींटियाँ काट रहीं हो। दिन में 3-4 बार व रात्रि में भी यह क्रम जारी रहता था जिसमें मुझे हाथ से खुजली करनी पड़ती थी। किसी कार्य में मन नहीं लगता था। गर्मी बरदास्त नहीं होती थी, ठंडे वातावरण में रहना जरूरी था। इस वजह से मुझे मानसिक तनाव रहने लगा तथा जिससे मुझे नींद भी बहुत कम आती थी। डॉक्टरों ने यह कह कर छोड़ दिया कि अब यह खुजली तो कभी-कभी चलती रहेगी तथा जब भी इस तरह की परेशानी हो तो आप दवाईयाँ लेते रहे और इस को पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया जा सकता है।

इस बीमारी के कारण मैं सदैव डिप्रेशन में रहने लगा था। फरवरी 94 में मेरे जीजाजी के कहने पर बीकारनेर में सद्गुरुदेव श्री रामलालजी से दीक्षा ली एवं नियमित रूप से ध्यान करने लगा। 3-4 दिनों में मुझे गर्दन की यौगिक क्रियाएँ प्रारम्भ हुई एवं सिर की नसों में काफी खिंचाव होता था। 15-20 दिनों में ही सिर की खुजली एवं आंतरिक जलन से, मैं मुक्त हो गया। तब से लेकर आज तक कभी भी इस तरह की खुजली और जलन नहीं हुई।

आजकल ध्यान में हल्का योग होता है एवं ठुड्डी, गले व छाती के सन्धि स्थल पर लग जाती है फिर पेट का आंतरिक खिंचाव स्वत: ही होने लगता है व पेट रीढ़ की हड्डी से चिपकने लगता है। आज्ञाचक्र पर भी काफी आनन्ददायक खिंचाव होता हैं तथा शरीर एकदम हल्का हो जाता है, तथा बिल्कुल चिंता मुक्त हो गया हूँ। धूप में घूम कर भी काफी काम-काज करता हूँ। दीक्षा से पूर्व तो धूप में निकल ही नहीं सकता था। आँखें बहुत लाल हो जाती थी और सदैव काला चश्मा पहने रखता था। अब बिना चश्में के ही सारे कार्य कर लेता हूँ एवं गुरुदेव की कृपा से स्वस्थ हूँ।

-राजेन्द्र कुमार
'ए' 177 कमला नेहरू नगर
जोधपुर

संदर्भ-'राजकुल संदेश'
15 सितम्बर 1994 में प्रकाशित

अपील

समस्त साधक गणों से निवेदन है कि समर्थ सद्गुरुदेव की आराधना करने पर आपके जीवन में जो बदलाव आया है, रोगों व नशों से मुक्त हुए हैं, आध्यात्मिक विकास हुआ है, यदि किसी के पास गुरुदेव की पुरानी वार्ता उपलब्ध हो या सिद्धयोग दर्शन से संबंधित कोई लेख हो तो अपना पूर्ण पता, संपर्क सूत्र व अपनी फोटो सहित अनुभूतियाँ एवं बीमारियों से संबंधी लेख भेजें, जिसे स्पिरिचुअल-साइंस मासिक पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकें।

यदि आप "स्पिरिचुअल साइंस" मासिक पत्रिका के वार्षिक, द्विवार्षिक या आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो आप 300/- वार्षिक, 600/- द्विवार्षिक या 3000/- आजीवन (11 वर्ष) शुल्क राशि, संस्था के बैंक खाते में या डी डी द्वारा भेज सकते है।

बैंक खाते का विवरण

A/c Name- Adhyatma Vigyan Satsang Kendra, Jodhpur
Bank- State Bank of Indai (SBI)
A/c No. 34033768041
Branch- Chopasani Housing Board (CHB) Jodhpur
IFS Code- SBIN0012846

-सम्पादक

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

यह सर्व विदित है कि विरोधी आसुरिक शक्तियाँ निम्नतर प्रकृति की क्रियाओं का लाभ उठाती हैं और उनके द्वारा सिद्धि को बिगाड़ने, नष्टभ्रष्ट करने या उसमें विलम्ब कराने की चेष्टा करती हैं।

वस्तुओं को देखना एक बात है और उन्हें अपने अन्दर प्रवेश करने देना बिलकुल दूसरी। व्यक्तिको बहुत सी बातों का अनुभव करना है, देखना और अवलोकन करना, उन्हें चेतना के प्रदेश में ले आना तथा उनके स्वरूप को जानना है। लेकिन कोई कारण नहीं कि तुम उन्हें अपने अन्दर घुसने और अपने ऊपर अधिकार जमाने दो। भगवान् को और उन चीजों को जो भगवान् की ओर से आती हैं, केवल उन्हीं को अपने अन्दर प्रविष्ट होने की स्वीकृति दी जा सकती है।

यह कहना कि सब प्रकाश अच्छा होता है, इस कथन के समान है कि जल मात्र अच्छा होता है-अथवा, सब स्वच्छ या पारदर्शी जल अच्छा होता है, पर यह बात सच नहीं है। मनुष्य को पहले यह देखना चाहिये कि प्रकाश का स्वरूप क्या है? या वह कहाँ से आता है? अथवा उसमें क्या है? उसके बाद ही वह कह सकता है कि यह **सच्चा प्रकाश** है। मिथ्या प्रकाश भी होते हैं और भ्रम में डालने वाली चमकें तथा निम्न प्रकाश भी जिनका सम्बन्ध सत्ता के निम्न स्तरों के साथ होता है। इसलिये मनुष्य को सावधान रहना और उनमें भेद करना चाहिये, **सच्चा विवेक** तो **चैत्य पुरुष** का विकास होने पर और परिशोधित मन और अनुभव से ही प्राप्त होगा।

महज शक्ति की प्रचण्डता ही यह नहीं बताती कि यह अशुभ शक्ति है। दिव्य शक्ति भी प्रायः बहुत प्रचण्डता के साथ कार्य करती है। सब कुछ शक्ति के स्वरूप और उसकी क्रिया पर निर्भर करता है। वह क्या करती है, उसका क्या प्रयोजन प्रतीत होता है ? यदि वह आधार के शुद्ध करने या खोलने का कार्य करे या अपने साथ प्रकाश शान्ति लाये, या विचारों, भावों, वेदनाओं में और चरित्र में उच्चतर चेतना की ओर मोड़ने की सृष्टि से परिवर्तन लाने की तैयारी करे तो यह सही शक्ति है। यदि यह अन्धेरी या धुंधली चीज हो या सत्ता को राजसिक या **अहंभावपूर्ण सुझावों** के द्वारा विक्षुब्ध करती हो अथवा निम्न प्रकृति को उत्तेजित करती हो तो ये विरोधी शक्ति है। मैं नहीं समझता कि मैंने यह कहा हो कि तुम हमारा योग नहीं कर सकते जब कि तुम्हें ऐसे अनुभव हुए और अब भी हो रहे हैं जो इस योग के विशेष लक्षण हैं। चेतना में हुए अवरोध और आक्रमण इस बात का प्रमाण नहीं कि मनुष्य **योग-साधना** करने का अधिकारी नहीं है। योग साधना करने वाला ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है जिसके सामने ये नहीं आते, यहाँ तक कि जो महान् सिद्ध-योगी बन गये हैं उनके सामने भी साधना के काल में ये चीजें आई थीं।

यह तथ्य नहीं है कि राजयोगी या दूसरे लोगों पर पारिपाश्विक शक्तियों के आक्रमण नहीं होते। लक्ष्य चाहे मोक्ष हो या रूपान्तर, सभी पर आक्रमण होते हैं -- क्योंकि प्राणिक शक्तियाँ न मुक्ति चाहती हैं न ही रूपान्तर। केवल योगीजन इसके विषय में प्रचलित परिभाषा में कहते हैं कि ये राक्षसी-माया या काम क्रोध या लोभ के आक्रमण हैं,-वे लोग इन वस्तुओं के उद्‌गम का पता लगाने की या वे किस प्रकार अन्दर आयी इस बात की खोज करने की परवाह नहीं करते -परन्तु स्वयं यह वस्तु सर्व विदित है।

विरोधी शक्तियाँ हरेक साधक पर आक्रमण करती हैं। कुछ इनके सम्बन्ध में सचेतन होते हैं, अन्य नहीं। उनका लक्ष्य या तो व्यक्ति को प्रभावित करना होता है या उसे उपयोग में लाना अथवा उसकी साधना या कर्म को बरबाद करना या इसी प्रकार का कोई अन्य हेतु। उनका उद्देश्य कसौटी पर कसना नहीं है, परन्तु **पथप्रदर्शक** शक्ति के द्वारा उनके आक्रमण का उपयोग एक कसौटी के रूप में किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यक्तिकी प्रकृति में यह आलोचनात्मक विरोधी आवाज होती है। जो अनुभव के सम्बन्ध में प्रश्न करती है, तर्क करती है, स्वयं उसके अस्तित्व से इनकार करती है, अपने विषय में और भगवान् के विषय में शंका करने का सुझाव देती है। मनुष्य को इसे एक ऐसे विरोधी शत्रु की आवाज के रूप में पहचानना होगा जो प्रगति को रोकने की और इस पर आस्था रखने से बिलकुल इनकार करने की चेष्टा कर रहा है।

संदर्भ-अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे....

-श्री अरविन्द

मनुष्य और विकास

अभी तक यह वास्तव में सिद्ध नहीं किया जा सका है कि बंदर से मिलती-जुलती एक जाति, जो बंदरपन से नहीं, अपनी ही विशिष्टताओं से हमेशा युक्त थी, अपनी प्रकृति की प्रवृत्तियों के अंदर विकसित हुई और वह बन गयी जिसे हम 'मनुष्य' कहते हैं, **यह है वर्तमान मानव सत्ता।**

यह भी तो सिद्ध नहीं हुआ है कि मनुष्य की निम्नतर जातियों ने अपने अंदर से श्रेष्ठतर जातियों को विकसित किया; जिनमें घटिया संगठन और क्षमता थी वे नष्ट हो गयीं लेकिन यह नहीं सिद्ध किया गया है कि वे आज की मानव जातियों को अपने वंशजों के रूप में पीछे छोड़ गयीं; फिर भी प्रारूप के अंदर ऐसे विकास की संभावना की कल्पना की जा सकती है।

जड़ से प्राण, प्राण से मन की ओर प्रकृति की प्रगति को माना जा सकता है लेकिन अभी तक इसका कोई प्रमाण नहीं है कि जड़ प्राण में विकसित हुआ या प्राण-ऊर्जा मानसिक ऊर्जा में विकसित हुई। बस इतना ही माना जा सकता है कि प्राण जड़ में अभिव्यक्त हुआ है और मन जीवित जड़ में। क्योंकि इसके लिये कोई पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि वनस्पति की कोई जाति पशु-जीवन में विकसित हुई या निर्जीव जड़ का कोई संगठन जीवित अवयव में विकसित हुआ हो।

अगर भविष्य में यह **अन्वेषण** हो कि अमुक रासायनिक या अन्य परिस्थितियों से जीवन प्रकट होता है तो इस संयोग से केवल इतना ही प्रतिष्ठित होगा कि अमुक भौतिक परिस्थितियों में जीवन अभिव्यक्त होता है, यह नहीं कि अमुक रासायनिक परिस्थितियाँ जीवन की घटक हैं, उसके तत्त्व हैं या निर्जीव पदार्थ में से सजीव जड़-पदार्थ के रूपान्तरित होने के विकासात्मक कारण हैं।

यहाँ, जैसा कि अन्यत्र होता है, सत्ता की हर श्रेणी अपने-आप में और अपने द्वारा अस्तित्व रखती है, अपने ही स्वभाव के अनुसार अपनी ही निजी ऊर्जा द्वारा अभिव्यक्त होती है और उससे ऊपर या नीचे की श्रेणियाँ उसके मूल या परिणामस्वरूप निष्कर्ष न होकर पृथ्वी-प्रकृति के निरन्तर क्रम अगर यह पूछा जाये कि फिर से सत्ता की विभिन्न श्रेणियाँ और प्रारूप आये कैसे तो यह उत्तर दिया जा सकता है कि मूलतः वे जड़ पदार्थ में उसके अंदर स्थिति चित्-शक्ति द्वारा अभिव्यक्त हुए, **अन्तर्वासी आत्मा** के ... व अस्तित्व के लिये सत्य-संकल्प की शक्ति द्वारा अपने सार्थक रूप और प्ररूप का निर्माण करते हुए अभिव्यक्त हुए।

विभिन्न श्रेणियों और अवस्थाओं में व्यावहारिक और भौतिक पद्धतियाँ काफी भिन्न हो सकती हैं, यद्यपि धारा की मूलभूत समानता दिखायी देती है। सृजनकारी शक्ति एक नहीं अनेक प्रक्रियाओं का उपयोग कर सकती है या बहुत-सी शक्तियों को एक साथ काम में लगा सकती हैं। जड़ में यह प्रक्रिया है। अमेय ऊर्जा से भरे अत्यणुओं का सृजन और संख्या तथा अभिकल्पना के अनुसार उनका संयोजन, उस प्राथमिक आधार पर ज्यादा बड़े अत्यणुओं की अभिव्यक्ति और उन्हें एक साथ करके उनका गोष्ठीकरण और संयोजन जिस पर मिट्टी, पानी, खनिज, धातु आदि गोचर वस्तुओं का, सारे भौतिक जगत् का प्रकट होना निर्भर होता है।

प्राण में भी **चित्-शक्ति** वनस्पति जीवन के अत्यणु रूपों और जन्तुक अत्यणुओं से शुरू करती हैं। वह एक आदि जीव-द्रव्य (प्लाज्मा) की रचना करके उसे अनेक गुणा बढ़ाती है, एक इकाई के रूप में **सजीव कोश** की रचना करती है, बीज या जीन जैसे सूक्ष्म उपकरणों के और भी प्रकार बनाती है, हमेशा गोष्ठी बनाने और संयोजन करने की समान रीति का व्यवहार करती है जिससे वह अलग-अलग क्रियाओं द्वारा नाना प्रकार के सजीव अवयवों का निर्माण करती है।

प्ररूपों का सतत् सृजन दिखलायी देता है लेकिन यह विकास का असंदिग्ध प्रमाण नहीं है। कभी-कभी प्ररूप एक-दूसरे से दूर होते हैं और कभी-कभी बहुत ज्यादा एक से, कभी आधार में एक होते हैं परंतु ब्योरे में भिन्न।

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

"India's Rebirth."

*

"I write, not for the orthodox, nor for those who have discovered a new orthodoxy, Samaj or panth, nor for the unbeliever. I write for those who acknowledge reason but do not identify reason with western materialism; who are sceptics but not unbelievers; who admitting the claims of modern thought, still believe in India, her mission, her gospel, her immortal life and her eternal rebirth."

→ Out of the ruins of the west. "Sri Aurobindo"
"India's rebirth." (C. 1911)

"India of the ages is not dead nor has she spoken her last creative word; she lives and has still something to do for herself and the human peoples. And that which must seek now to awake is not an anglicised oriental people, docile pupil of the west and doomed to repeat the cycle of the occident's success and failure, but still the ancient immemorable Shakti recovering her deepest self, lifting her head higher towards the supreme source of light and strength and turning to discover the complete meaning and a vaster form of her "Dharama"."

"Sri Aurobindo"

Utthapana Siddhis

"I was having a very intense "Sadhana" on the vital plane and I was concentrated. And, I had a questioning mind; "Are such siddhis as utthapana (levitation) possible?" I then suddenly found myself raised up in such a way that I could not have done it myself with muscular exertion. Only one part of the body was slightly in contact with the ground and the rest was raised up against the wall. I could not have held my body like that normally even if I have wanted to and I found that the body remained suspended like that without any exertion on my part."

"Sri Aurobindo"

→ Another spiritual experiences in Alipur Jail concerned Sri Vivekananda:-
"It is a fact that I was hearing constantly the voice of Sri Vivekananda speaking to me for two weeks in the Jail in my solitary meditation and felt his presence. The voice spoke only on a special and limited but very important field of spiritual experience and it ceased as soon as it finished saying all that it had to say on the subject." "Sri Aurobindo"

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

January 29, 1939:— "It is better not to destroy the capitalist class as the Socialists want to; they are the source of national wealth. They should be encouraged to spend for the nation. Taxing is all right, but you must increase production, start new industries, and also raise the standard of living; without that if you increase the taxes there will be a state of depression."

"Sri Aurobindo"

~~Q-yon~~ "Avatar"? अवतार?

"Q":- You said, "But why can't the inner self be hidden from all in such lives?" I fail to understand how anyone could hide one's inner self from Avatars and vibhutis.

"A":- An Avatar or vibhuti have the knowledge that is necessary for their work, they need not have more. There was absolutely no reason why "Budha" should know what was going on in Rome. An Avatar even does not manifest all the divine — omniscience and omnipotence; he has not come for any such unnecessary display; all that is behind him but not in the front of his consciousness. As for the Vibhuti, the Vibhuti need not even know that he is a power of the divine. Some Vibhutis like Julius Caesar for instance have been atheists. Buddha himself did not believe in a personal God, only in some impersonal and indescribable permanent."

"Sri Aurobindo"

Q. Since you and mother were on earth constantly from the beginning what was the need for Avatars coming down here one after another?

"Ans." We were not on earth as Avatars.

गुरुदेव से प्रार्थना

– हे गुरुदेव ! हे सर्वविघ्न विनाशक, आपकी जय हो।

– हे गुरुदेव ! हमें वर दो कि हमारे अंदर की कोई भी चीज, आपके कार्य में बाधक न हो।

– हे गुरुदेव ! हमें वर दो कि हमारे अंदर की कोई भी चीज आपकी अभिव्यक्ति में रुकावट न डाले।

– हे गुरुदेव ! हमें वर दो, कि हर वस्तु में तथा प्रत्येक क्षण में आपकी ही इच्छा पूर्ण हो।

– हे गुरुदेव ! हम यहाँ आपके सम्मुख उपस्थित हैं ताकि हमारे अंदर, हमारी सत्ता के अंग प्रत्यंग में, उसके प्रत्येक कार्य में, उसकी सर्वोच्च उँचाईयों से लेकर शरीर के क्षुद्रतम् कोशों तक में आपकी ही इच्छा कार्यान्वित हो।

– हे गुरुदेव ! ऐसी कृपा करो कि हम आपके प्रति संपूर्ण रूप से और सदा के लिए एकनिष्ठ बन सकें।

– हे गुरुदेव ! ऐसी कृपा करो कि हम अन्य सब प्रभावों से अलग रहते हुए, पूरी तरह से आपके ही प्रभाव के अधीन हो जाएं।

– हे गुरुदेव ! हमें वर दो कि हम आपके प्रति एक गंभीर और तीव्र कृतज्ञता रखना कभी न भूलें।

– हे गुरुदेव ! ऐसी कृपा करो, कि प्रत्येक क्षण हमें जो अद्भुत वस्तुएँ आपकी देन के रूप में मिलती हैं, उनमें से किसी का भी हम कभी अपव्यय न करें।

– हे गुरुदेव ! हमें ऐसा वर दो कि हमारे अंदर की प्रत्येक चीज आपके कार्य में सहयोग दें और सब कुछ आपकी सिद्धि के लिए तैयार हो जाएँ।

– हे गुरुदेव ! आपकी जय हो, हे परमेश्वर, हे समस्त सिद्धियों के अधीश्वर आपकी जय हो।

– हे गुरुदेव ! हमें अपनी विजय में सक्रिय और ज्वलंत, अखंड और अचल-अटल विश्वास प्रदान करो।

–साधक

www.the-comforter.org

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

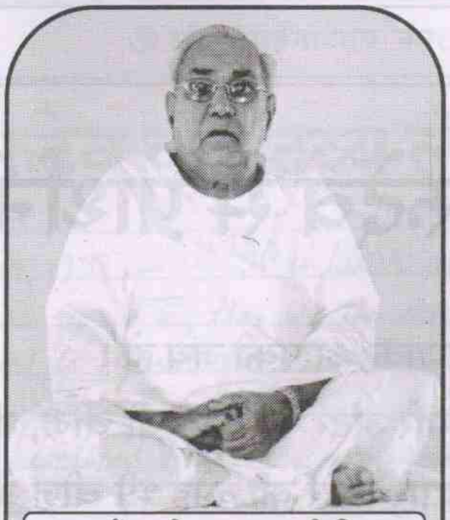

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

► ध्यान की विधि ◄

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणयाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

► Method of Meditation ◄

Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently chant (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in.

During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

शक्तिपात–दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (**Enlightened**) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (**Key**) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (**Round the Clock**) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति–धर्मों के जिज्ञासु स्त्री–पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

Web : www.the-comforter.org

जोधपुर आश्रम–स्काऊट गाइड कैडेट्स को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया।
(2 अगस्त 2018)

श्री धन्ना भगत बालिका विद्यालय गाँव नन्दवान, पंचायत समिति, लूणी (जोधपुर) में सिद्धयोग शिविर आयोजित।
(25 अगस्त 2018)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

कलियुग में सर्वोत्तम यज्ञ

"नाम जप"

"कलियुग केवल नाम आधारा। सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा।।"

कलियुग में केवल, सद्‌गुरु द्वारा दिया हुआ हरि नाम (संजीवनी मंत्र) का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है।

''अब कलियुग में देखिए! हर युग में हमारे दार्शनिक ग्रन्थों के अनुसार आराधना का तरीका तय होता है। सत्‌युग का अलग था, त्रेता का अलग था, द्वापर का अलग था। मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए, हमारे धर्म में आराधना तय की गई है। अब कलियुग में, उस तरीके से (आराधना) करना संभव नहीं है। इसलिए, इस युग में केवल हरि नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा दिलाता है। ईश्वर के नाम का जप। गीता में भगवान् कृष्ण ने नाम जप को सबसे उत्तम यज्ञ की संज्ञा दी है।

दसवें अध्याय में अपने स्वरुपों का वर्णन किया है। भगवान् ने पच्चीस वें श्लोक में कहा है कि ''यज्ञों में, मैं जप यज्ञ हूँ। नाम जप सबसे उत्तम यज्ञ है।'' महाभारत कहती है कि यह एक ऐसा यज्ञ है जिससे कोई हिंसा नहीं होती है। महाभारत काल में हिंसा बहुत हुई, इसलिए वह लोग हिंसा से बहुत डरते थे।

नाम जप से कोई हिंसा नही होती। कर्म काण्डी यज्ञ करोगे, आग में घी लकड़ी वगैरह जलाओगे तो कमोबेश थोड़े बहुत जीव जलेंगे, मगर नाम जप में कोई हिंसा नहीं होती। मनु ने, मनु स्मृति में कहा है कि 'जप यज्ञ' द्वारा, कर्म काण्डी यज्ञों से हजार गुणा ज्यादा फायदा होता है। मैं तो आपको एक नाम बताऊँगा, वह आपको जपना है। वैसे मैं, क्योंकि एक कृष्ण उपासक हूँ, इसलिए राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ। भगवान् कृष्ण पूर्णावतार थे और उस कृष्ण के नाम का ही चमत्कार है कि यह सब परिवर्तन हो रहा है। मेरा कोई पंथ नहीं, नया मत नहीं, वही वैदिक दर्शन को मूर्त रुप दिया जा रहा है।''

-समर्थ सद्‌गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें
Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी
पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी